CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाहु वाहु सतिगुरु सुजाणु है, जिसु अंतरि ब्रहमु विचारु ।
वाहु वाहु सतिगुरु निरंकारु है, जिसु अंतु न पारावारु ।।३।।
बड़भागी हरि पाइआ पूरन परमानन्दु ।
जन नानक नामु सलाहिआ, बहुड़ि न मनि तनि भंगु ।।४।।
गुरमुखि सची आसकी जितु प्रीतमु सचा पाईऐ ।
अनदिनु रहहि अनंदि नानक सहजि समाईऐ ।।५।।
सचा प्रेम पिआरु गुर पूरे ते पाइए ।
कबहू न होवै भंगु नानक हरिगुण गाइए ।।६।।

४. सलाहिआ=सराहना या स्तुति की । बहुड़ि=फिर । न मनि तनि भंगु=मन और तन से विलग नहीं होता ।

५. आसकी=प्रीति । अनदिनु=नित्य, निरन्तर ।

दादू दयाल

दादू सतगुर सूं सहजैं मिल्या, लीया कंठि लगाइ ।
दाया भई दयाल की, तब दीपक दिया जगाइ ।।१।।
सबद दूध घृत रामरस, कोइ साध बिलोवणहार ।
दादू अंमृत काढिले, गुरमुखि गहै बिचार ।।२।।
धीव दूध मैं रमि रह्या, व्यापक सबही ठौर ।
दादू बकता बहुत हैं, मथि काढ़ैं ते औंर ।।३।।
मानसरोवर माँहि जल, प्यासा पीवै आइ ।
दादू दोष न दीजिये, घर घर कहण न जाइ ।।४।।

२. बिलोवणहार=मंथन अर्थात् तत्व-विचार करनेवाला ।

४. माँहि=मध्य में, अन्दर उतर या डूबकर ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवै किरका दरद का, टूटा जोड़ै तार।
दादू सांधै सुरति कूँ, सो गुर पीर हमार ॥५॥
दादू यहु मसीति यहु देहुरा, सतगुरु दिया दिखाइ।
भीतरि सेवा बंदिगी, बाहरि काहे जाइ ॥६॥
गुर पहली मन सौं कहै, पीछै नैन की सैंन।
दादू सिख समझै नहीं कहि समझावै बैन ॥७॥
कहैं लखै सो मानवी, सैंन लखै सो साध।
मन की लखै सु देवता, दादू अगम अगाध ॥८॥

५. किरका=एक कण। दरद=परमात्मा के आत्यंतिक विरह की वेदना से आशय है।

६. मसीति=मसजिद। देहुरा=देवालय।

७. पहली=पहले तो। सैन=संकेत।

८. लखै=समझले। मानवी=मनुष्य।

रज्जब

रज्जब कूँ अज्जब मिल्या, गुरु दादू दातार।
दुख दरिद्र तबका गया, सुख संपत्ति अपार ॥१॥
गुरु दीरघ गोविन्द सूँ, सारै सिष्य सुकाज।
रज्जब मक्का बड़ा, परि पहुँचै बैठि जहाज ॥२॥
कामधेनु गुरु क्या कहै, जो सिष निःकामी होइ।
रज्जब मिलि रीता रह्या, मँदभागी सिष जोइ ॥३॥

१. अज्जब=अजब, अलौकिक। दातार=दाता।

२. सारै=पूरा करता है।

३. निःकामी=यहाँ निकम्मा से आशय है। रीता=खाली, ज्ञानशून्य।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिला सँवारी राजनैं, ताहि नवैं सबकोइ।
रज्जब सिष-सिल गुरु गढ़ै, सोइ पूजि किन होइ ।।४।।
गुरु ग्याता परजापती, सेवक माटीरूप।
रज्जब रज सूँ फेरिकै घड़िले कुम्भ अनूप ।।५।।
बिरहिण बिहरै रैनदिन, बिन देखे दीदार।
जन रज्जब जलती रहै, जाग्या बिरह अपार ।।६।।
बिरहा-पावक उर बसै, नखसिख जालैं देह।
रज्जब ऊपरि रहम करि बरसहु मोहन मेह ।।७।।

४. सिला सँवारी राजनैं=कारीगर ने पत्थर से मूर्ति तैयार की। पूजि=पूज्य।

५. परजापती=प्रजापति, कुम्हार। रज मिट्टी।

६. विहरै=विछोह में तड़पती है।

दरिया साहब (मारवाड़वाले)

नहिं था राम रहीम का, मैं मतिहीन अजान।
दरिया सुध बुध ग्यान दे, सतगुरु किया सुजान ।।१।।
सतगुरु सब्दाँ मिट गया, दरिया संसय सोग।
औषद दे हरिनाम का तनमन किया निरोग ।।२।।
रंजी सास्तर ग्यान की, अंग रही लिपटाय।
सतगुरु एकहि सब्द से, दीन्ही तुरत उड़ाय ।।३।।
जैसे सतगुरु तुम करी, मुझसे कछू न होय।
विष-भाँडे विष काढ़कर, दिया अमीरस मोय ।।४।।

१. सुजान=ज्ञानवान्।

२. सब्दाँ=शब्दों से, उपदेशों से। सोग=शोक।

३. रंजी=रज, धूल। सास्तर=शास्त्र।

४. दिया मोय=भर दिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब्द गहा सुख ऊपजा, गया अँदेसा मोहि।
सतगुरु ने किरपा करी, खिड़की दीनीं खोहि ॥५॥

५. अँदेसा=डर, संशय। दीनीं खोहि=खोलदी।

चरणदास

सीधी पलक न देखते, छूते नाहीं छांहि।
गुरु सुकदेव कृपा करी, चरनोदक ले जांहि ॥१॥
बलिहारी गुरु आपने, तन मन सदके जावँ।
जीव ब्रह्म छिन में कियो, पाई भूली ठावँ ॥२॥
जाति बरन कुल मन गया, गया देह-अभिमान।
अपने मुखसूँ क्या कहूँ, जग ही करै बखान ॥३॥
सतगुरु मेरा सूरमा, करै शब्द की चोट।
मारै गोला प्रेम का, ढहै भ्रम्म का कोट ॥४॥
सतगुरु शब्दी तेग है, लागत दो करि देहि।
पीठ फेरि कायर भजै, सूरा सनमुख लेहि ॥५॥
सतगुरु शब्दी तीर है, तन मन कीयो छेद।
बेदरदी समझै नहीं, बिरही पावै भेद ॥६॥

१. पलक=नजर से। चरनोदक ले जांहि=अब लोग मेरे पैरों का धोवन ले जाते हैं।

२. सदके=बलिहारी। ठावँ=जीव का निजस्थान, ब्रह्म-पद।

४. भ्रम्म=भ्रम, अविद्या।

५. दो करि देहि=दो टुकड़े कर देती है। भजै=भाग जाती है। सूरा सनमुख लेहि=शूरवीर वार को सामने लेता है।

६. बेदरदी=दरद के भेद को न जाननेवाला; अनधिकारी। भेद=मर्म, रहस्य।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सतगुरु शब्दी बान है, अंग अंग डारे तोड़।
प्रेम-खेत घायल गिरै, टाँका लगै न जोड़॥७॥
ऐसी मारी खैंचकर, लगी वार गई पार।
जिनका आपा ना रहा, भये रूप ततसार॥८॥
बचन लगा गुरु ज्ञान का, रूखे लागे भोग।
इन्द्र कि पदवी लौं उन्हें, चरनदास सब रोग॥९॥

७. आपा=अहंता, खुदी। ततसार=तदाकार, ब्रह्मरूप।

सहजो बाई

सब परबत स्याही करूँ, घोलूँ समुन्दर जाय।
धरती का कागद करूँ, गुरु-अस्तुति न समाय॥१॥
सहजो गुरु दीपक दियौ, देख्यौ आतमरूप।
तिमिर गयौ चाँदन भयौ, पायौ परघट भूप॥२॥
सहजो गुरु परसन्न ह्वै, मेटचौ मन सन्देह।
रोम-रोम सूँ प्रेम उठि, भीज गई सब देह॥३॥
सहजो गुरु परसन्न ह्वै, मूंद लिये दोउ नैन।
फिर मोसूँ ऐसे कही, समझ लेहि यह सैन॥४॥
चिउँटी जहाँ न चढ़ि सकै, सरसों ना ठहराय।
सहजो कूँ वा देस में, सतगुरु दई बसाय॥५॥
सहजो गुरु बहुतक फिरैं, ज्ञान ध्यान सुधि नाहिं।
तार सकै नहिं एककूँ, गहैं बहुत की बाँहि॥६॥

१. न समाय=पूरी नहीं लिखी जा सकती।

२. परघट=प्रकट। भूप=परमात्मा से अभिप्राय है।

४. सैन=संकेत; ध्यान में लव लगाकर निजरूप देखने की ओर इशारा!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहजो गुरु रंगरेज सा, सबहीं कूँ रंग देत।
जैसा तैसा बसन ह्वै, जो कोई आवै सेत॥७॥

७. सेत=शुद्ध, निर्मल।

दयाबाई

चरनदास गुरुदेवजू, ब्रह्मरूप सुख-धाम।
ताप-हरन सब सुख-करन, दया करत परनाम॥१॥
अंधकूप जग में पड़ी, दया करम-बस आय।
बूड़त लई निकासि करि, गुरु-गुन-ज्ञान गहाय॥२॥
सतगुरु ब्रह्मसरूप हैं, मनुषभाव मत जान।
देहभाव मानैं दया, ते हैं पसू समान॥३॥

१. गहाय=ग्रहण कराकर, सौंपकर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाम-स्मरण का अंग

कबीरदास

मेरा मन सुमिरै राम कूँ, मेरा मन रामहिं आहि।
अब मन रामहिं ह्वै रह्या, सीस नवावौं काहि ॥१॥
राम पियारा छाड़िकरि, करै आन का जाप।
बेस्वा केरा पूत ज्यूँ, कहै कौन सूँ बाप ॥२॥
सुमिरन सुरत लगाइके मुख तें कछू न बोल।
बाहर के पट देइके अन्तर के पट खोल ॥३॥
माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारिदे, मन का मनका फेर ॥४॥
माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं।
मनुवां तो दहुँदिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं ॥५॥
तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझमें रही न हूँ।
वारी तेरे नाम पर, जित देखूँ तित तूँ ॥६॥

---

१. रामहिं आहि = राम के ही लिए है।

२. वेस्वा = वेश्या।

४. फेर = (१) भेद, द्वैतभाव (२) माला जपना। मनका = गुरिया, सुमिरनी का दाना।

५. दहुँदिसि = दशों दिशाओं में चंचलतावश।

६. वारी = बलिहारी, कुर्बान हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रैदास

हरि-सा हीरा छाँड़िकै, करैं आन की आस।
ते नर जमपुर जाहिंगे, सत भाषै रैदास ॥१॥
रैदास राति न सोइये, दिवस न करिये स्वाद।
अहनिसि हरिजू सुमिरिये, छाँड़ि सकल प्रतिवाद ॥२॥

२. प्रतिवाद=बकवास।

गुरु नानकदेव

जिनी नाम धिआइआ गए मसक्कति घालि।
नानक ते मुख उज्जले केती छुट्टी नालि ॥१॥

१. जिन्होंने नाम का अभ्यास किया है, वे अपना श्रम सफल कर गये। नानक ! उनके मुख प्रकाशमान हैं; उनके सत्संग से कितनेही लोग (भव-बंधन से) मुक्त हो गये।

गुरु अंगद

जा सुखु ता सहु राविओ दुखि भी संम्हालि ओइ।
नानकु कहै सिआणीए इउ कंत मिलावा होइ ॥१॥

१. जिसका नाम तू सुख में याद करता है, दुःख में भी उसे ही याद कर। नानक कहता है, हे सयानी ! इसी तरह स्वामी से तेरा मिलन होगा।

गुरु तेगबहादुर

गुन गोबिंद गाइओ नहीं, जनमु अकारथ कीन।
कहु नानक हरि भजु मना, जिहि बिधि जल कौ मीन ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिखिअन सिउ काहे रचिओ, निमिख न होहि उदास।
कहु नानक भजु हरि मना, परै न जम की फाँस ॥२॥
तरुनापो योंही गइओ, लिइओ जरा तनु जीति।
कहु नानक भजु हरि मना, अउधि जाति है बीति ॥३॥
बिरध भइओ सूझै नहीं, काल पहूँचिओ आन।
कहु नानक नर बावरे, किउ न भजै भगवान ॥४॥
सभ सुखदाता रामु है, दूसर नाहिन कोइ।
कहु नानक सुनि रे मना, तिह सिमरत गति होइ ॥५॥
जिह सिमरत गति पाइए, तिहि भजु रे तैं मीत।
कहु नानक सुन रे मना, अउधि घटति है नीत ॥६॥
घटि घटि में हरिजू बसै, संतन कहिओ पुकारि।
कहु नानक तिह भजु मना, भउनिधि उतरहि पारि ॥७॥

---

३. तरुनापो=तरुणाई, जवानी। जरा=बुढ़ापा। अउधि=अवधि, आयु।
४. बिरध=वृद्ध।
५. गति=सद्गति, मुक्ति।
६. नीत=नित्य।
७. भउनिधि=संसार-समुद्र।

बषना

रामनाम जिन ओषदी, सतगुर दई बताइ।
ओषदि खाइ र पछि रहै, बषना वेदन जाइ ॥१॥
पछि पांणी राखै नहीं, जो भावै सो खाइ।
तौ ओषदि गुण नां करै, बषना व्याधि न जाइ ॥२॥

---

१. ओषदी=औषध, दवा। पछि=पथ्य। वेदन=पीड़ा, रोग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इहिं ओषद तें साध सब, अनत उधारी देह।
कोइ कुपछ का फेर है, नहीं त ओषद येह ॥३॥

३. कुपछ=कुपथ्य। फेर=अंतर, भूल।

सुन्दरदास

सुन्दर सदगुरु यौं कह्या, सकल-सिरोमनि नाम।
ताकौं निसदिन सुमरिये, सुखसागर सुखधाम ॥१॥
राम नाम बिन लैन कौं और वस्तु कहि कौन।
सुन्दर जप तप दान व्रत, लागे खारे लौन ॥२॥
राम-नाम-पीयूष तजि, बिष पीवै मतिहीन।
सुन्दर डोलैं भटकते, जन जन आगे दीन ॥३॥
सुमिरन ही में शील है, सुमिरन में संतोष।
सुमिरन ही तें पाइये सुन्दर जीवन-मोष ॥४॥

३. पीयूष=अमृत। विष=विषयरूपी विष।
४. मोष=मोक्ष।

मलूकदास

राम राम के नाम को, जहाँ नहीं लवलेस
पानी तहाँ न पीजिये, परिहरिये सो देस ॥१॥
धर्महिं का सौदा भला, दाया जग ब्योहार।
रामनाम की हाट ले, बैठा खोल किवार ॥२॥
जो तेरे घट प्रेम है, तो कहि कहि न सुनाव।
अंतर्जामी जानिहै, अन्तरगत का भाव ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माला जपों न कर जपों, जिभ्या कहों न राम।
सुमिरन मेरा हरि करै, मैं पाया बिसराम ॥४॥

४. बिसराम=विश्राम, छुट्टी।

दरिया साहब (मारवाड़वाले)

राम बिना फीका लगै, सब किरिया सास्तर ग्यान।
दरिया दीपक कह करै, उदय भया निज भान ॥१॥
मुसलमान हिन्दू कहा, षट दरसन रंक राव।
जन दरिया हरिनाम बिन, सब पर जम का दाव ॥२॥
सतगुरु-संग न संचरा, रामनाम उर नाहिं।
ते घट मरघट सारिखा, भूत बसैं ता माहिं ॥३॥
दरिया सुमिरन राम का देखत-भूली खेल।
धन धन हैं वे साधवा, जिन लीया मन मेल ॥४॥
फिरी दुहाई सहर में, चोर गये सब भाज।
सत्रु फिरा मित्र जु भया, हुआ राम का राज ॥५॥

१. किरिया=क्रिया, कर्मकाण्ड।
२. षटदरसन=छह शास्त्र।
३. घट=शरीर। सारिखा=समान।
४. देखत-भूली=भूल-भुलैया। लीयामेल=प्रेम किया।
५. दुहाई=ढिंढोरा, घोषणा।

सहजोबाई

सहजो सुमिरन कीजिये, हिरदै माहिं दुराय।
होठ होठ सूँ ना हिलै, सकै नहीं कोइ पाय ॥१॥

१. सकै नहीं पाय=किसीको पता न चले।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राम-नाम यों लीजिये, जानै सुमिरनहार।
सहजो कै कर्तार ही, जानै ना संसार॥२॥
कामी मति भिष्टल सदा, चलै चाल बिपरीत।
सील नहीं सहजो कहै, नैनन माँहि अनीति॥३॥

३. भिष्टल=भ्रष्ट। अनीति=बुरी वासना।

दयाबाई

हरि भजते लागै नहीं, काल-ब्याल दुख-झाल।
तातें राम सँभालिये, दया छोड़ जग-जाल॥१॥
जे जन हरि-सुमिरन-बिमुख, तासूँ मुखहुँ न बोल॥
रामस्वरूप में जे पगे, तासूँ अन्तर खोल॥२॥
रामनाम के लेतहीं, पातक झुरैं अनेक।
रे नर हरि के नाम की, राखो मन में टेक॥३॥
नारायण के नाम बिन, नर नर नर जा चित्त।
दीन भयो बिल्लात है, माया-बसि ना थित्त॥४॥

१. झाल=ज्वाला। सँभालिये=स्मरण व सेवा करे।
२. अन्तर खोल=हृदय की गुप्त-से-गुप्त बात स्पष्ट बतलादे।
३. झुरैं=जल जाते हैं।
४. नर नर नर जा चित्त=जिसके चित्त में मनुष्य ही सम्बन्धी विचार चक्कर लगाते रहते हैं। बिल्लात है=आशा के वश गिड़गिड़ाता है। थित्त=स्थित, स्थिर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रेम-रस का अंग

कबीरदास

कबीर हरि-रस यौं पिया, बाकी रही न थाकि।
पाका कलस कुंभार का, बहुरि न चढ़ई चाकि ॥१॥
अंक भरे भरि भेंटिया, मन में नांहीं धीर।
कहै कबीर ते क्यूँ मिलैं, जबलग दोइ सरीर ॥२॥
कबीर भाठी कलाल की, बहुतक बैठे आइ।
सिर सौंपै सोई पिवै, नहीं तो पिया न जाइ ॥३॥
सबै रसांइण मैं किया, हरि सा और न कोइ।
तिल इक घट मैं संचरै, तौ सब तन कंचन होइ ॥४॥
पंजर प्रेम प्रकासिया, अन्तर भया उजास।
सुख करि सूती महल में, बानी फूटी बास ॥५॥
गगन गरजि बरसै अमी, बादल गहरि गंभीर।
चहुँदिसि दमकै दामिनी, भींजै दास कबीर ॥६॥
नैनां अंतरि आव तूँ, ज्यूँ हौं नैन झंपेऊँ।
ना हौं देखौं औरकूँ ना तुझ देखन देऊँ ॥७॥
लाली मेरे लाल की, जित देखों तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल ॥८॥

---

१. थाकि=अतृप्ति, भूख।
३. भाठी =शराव की भट्ठी या दूकान।
५. सूती=सोई।
७. झंपेउँ=मूंदलूं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शेख फरीद

ढूंढेदीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर।
जिन्हां नाउ सुहागणी तिना झाक न होर ॥१॥

१. तू अपने सुहाग को, अपने प्रीतम को खोज रहीं है, तो तेरे अन्दर जरूर कोई न-कोई कमी है;
जिसे सुहागिन कहते हैं वह किसी और की तरफ झाँकतीभी नहीं।

दादूदयाल

दादू प्याला नूर दा, आसिक अरसि पीवंति।
अठे पहर अल्लाह दा, मुँह दिट्ठे जीवंति ॥१॥
प्रेम-लहरि की पालकी, आतम वैसै आइ।
दादू खेलै पीव सौं, यह सुख कह्या न जाइ ॥२॥
दादू दया दयाल की, सो क्यों छानी होइ।
प्रेम पुलक मुलकत रहै, सदा सुहागनि सोइ ॥३॥
रोम रोम रस पोजिये, एती रसना होइ।
दादू प्यासा प्रेम का, यौं बिन तृपित न होइ ॥४॥
चिड़ी चंच भरि ले गई, नीर निघटि नहिं जाइ।
ऐसा वासण नां किया, सब दरिया मांहि समाइ ॥५॥

१. नूरदा=परम प्रकाशमय (पंजाबी विभक्ति का प्रयोग) मुँह दिट्ठे=मुख देखता हुआ।
२. वैसै=बैठती है।
३. छानी=छिपी हुई, गुप्त। मुलकत रहै=मुस्कराती रहती है।
४. रसना=जिह्वा।
५. चंच=चोंच। वासण=वर्तन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहजोबाई

प्रेम-दिवाने जो भये, पलटि गयो सब रूप।
सहजो दृष्टि न आवई, कहा रंक कहा भूप ॥१॥
प्रेम-दिवाने जो भये, जाति बरन गइ छूट।
सहजो जग बौरा कहै, लोग गये सब फूट ॥२॥
प्रेम-दिवाने जो भये, सहजो डिगमिग देह।
पाँव पड़ैं कितकै किती, हरि सम्हाल तब लेह ॥३॥

२. गये सब फूट = छोड़-छोड़कर अलग हो गये।
३. कितकै किती = कहीं के कहीं।

दयाबाई

प्रेम-मगन जे साध जन, तिन गति कही न जात।
रोय रोय गावत हँसत, दया अटपटी बात ॥१॥
हरिरस-माते जे रहैं, तिनको मतो अगाध।
त्रिभुवन की संपति दया, तृनसम जानत साध ॥२॥
कहूँ धरत पग परत कहुँ, उमगि गात सब देह।
दया मगन हरिरूप में, दिन दिन अधिक सनेह ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विरह का अंग

कबीरदास

जिहि सरि मारी काल्हि, सो सर मेरे मन बस्या।
तिहि सरि अजहूँ मारि, सर बिन सचु पाऊँ नहीं ॥१॥
बिरह-भुवंगम तन बसै, मन्त्र न लागै कोइ।
राम-बिवोगी ना जिवै, जिवै त बौरा होइ ॥२॥
सब रग तंत रवाब तन, बिरह बजावै नित्त।
और न कोई सुणि सकै, कै सांई कै चित्त ॥३॥
अंषड़ियाँ झाँई पड़ी, पंथ निहारि-निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या, राम पुकारि-पुकारि ॥४॥
इस तन का दीवा करौं, बाती मेल्यूं जीव।
लोही सींचौं तेल ज्यूँ, कब मुख देखौं पीव ॥५॥
कै बिरहनि कूं मीच दे, कै आपहिं दिखलाइ।
आठ पहर का दाझणां, मोपै सह्या न जाइ ॥६॥
बिरह भुवंगम पैठिकै, किया कलेजे घाव।
बिरही अंग न मोड़िहै, ज्यों भावै त्यों खाव ॥७॥

---

१. सरि=सद्‌गुरु के शब्द-वाण से आशय है। सचु=चैन।
२. बिवोगी=वियोगी।
३. तंत=तार। रवाब=एक प्रकार का बाजा, इसरार।
४. झाँई=अँधेरा।
६. दाझणां=जलना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिरहिन ओदी लाकड़ी, सपचै औ धुँधुआय।
छूट पड़ौं या बिरह से, जो सगरी जरि जाय ॥८॥
हिरदे भीतर दव बलै, धुआँ न परगट होय।
जाके लागी सो लखै, की जिन लागी सोय ॥९॥
कबिरा बैद बुलाइया, पकरिके देखी बाँहि।
बैद न वेदन जानई, करक कलेजे माँहि ॥१०॥

८. ओदी=गीली। सपचै=सुलगे।
९. दव=आग। लागी=(१) लगी है (२) लगाई है।

गुरु अर्जुनदेव

तू चउ सजण मैडिआ देई सीसु उतारि।
नैण महिंजे तरसदे कदि पसी दीदारु ॥१॥
नीहु महिंजा तऊ नालि बिआ नेह कूड़ावै डेखु।
कपड़ भोग डरावणे जिचरु पिरी न डेखु ॥२॥
उठी झालू कंतड़े हउ पसी तउ दीदारु।
काजल हारु तमोल रसु बिनु पसे सभि रस छारु ॥३॥
पहिला मरण कबूलि करि जीवण की छड़ि आस।
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारे पास ॥४॥

१. अय मेरे साजन! अगर तू कहे, तो मैं अपना सिर उतारकर तुझे देदूँ। आँखें तरसती हैं कि कब तुझे देखूँ।
२. मेरी प्रीति तेरे ही साथ है; मैंने देख लिया कि और सब प्रीति झूठी है। तुझे देखे बिना ये वस्त्र और ये भोग मुझे डरावने लगते हैं।
३. मेरे प्यारे! तेरे दर्शन के लिए मैं बड़ी भोर उठ जाती हूँ। काजल, हार और पान और सारे मधुर रस, बिना तेरे दर्शन के धूल की तरह लगते हैं।
४. कबूलि करि=स्वीकार करले। छड़ि=छोड़कर। रेणुका=पैरों की धूल; अत्यंत तुच्छ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिसु मनि बसै पारब्रह्मु निकटि न आवै पीर।
भुख तिख तिसु न विआपई जमु नहीं आवै नीर ॥५॥
धणी विहूणा पाट पटंबर भाही सेती जाले।
धूड़ी बिचि लुडंदड़ी साहां नानक तै सह नाले ॥१४॥

५. पीर=दुःख। तिख=तृषा, प्यास। जमु=काल। नीर=निकट।
६. मेरा प्रीतम मेरे पास नहीं, तो इन रेशमी वस्त्रों को लेकर क्या करूँगी,
मैं तो इनमें आग लगा दूँगी;
प्यारे, तेरे साथ धूल में लोटती हुई भी मैं सुन्दर दीखूंगी।

शेख फरीद

फरीदा राती बडीआं धुखि धुखि ऊठनि पास।
धिगु तिन्हादा जीविआ जिन्हा बिडाणी आस ॥१॥
फरीदा गलीए चिकड्डु दूरि घरु नालि पिआरे नेहु।
चला त भीजै कंबली रहां त तुटै नेहु ॥२॥
भिजउ लिजउ कंबली अलह वासहु मेहु।
जाइ मिला तिन्हा सजणा तुटउ नाही नेहु ॥३॥

१. फरीद, रातें लंबी हो गईं; पसलियों में हूक उठ रही हैं—दर्द से करवटें बदलनी पड़ रही हैं।
धिक्कार है उन्हें, जिनको कि पराई आशा है।
२. फ़रीद, गलियों में कीचड़-ही-कीचड़ हैं; और, प्यारे का घर, जिससे कि मैंने प्रीति जोड़ी है, दूर है;
अगर मैं उसके पास जाऊँ तो मेरी कंबली भीग जायेगी, और मैं अपने घर रहूँ तो मेरी प्रीति टूट जायेगी।
३. अल्लाह, भलेही तू मेह बरसाये, और मेरी कंबली को भिगो-भिगोकर तर करदे, फिर भी अपने प्यारे साजन से मेरा मिलना होकर ही रहेगा, ताकि हमारी प्रीति न टूटे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलंन्हि।
पैरी धकां सिरि जुलां जे मूं पिरी मिलंन्हि ॥४॥
कागा करंग ढढोलिआ सगल खाइआ मासु।
ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आसु ॥५॥

४. शरीर तेरा तंदूर की तरह तप रहा है; मेरी हड्डियाँ ईंधन की लकड़ी की तरह जल रही हैं;
मेरे पैर अगर थक जायें, तोभी मैं अपने प्रीतम से मिलने सिर के बल चलकर जाऊँगी।

५. कौवो! तुमने मेरी ठठरी का खोज-खोजकर सारा मांस खा डाला; पर इन दो नयनों को चोंच न लगाना, क्योंकि मुझे अबभी अपने प्रीतम के देखने की आस है।

दादू दयाल

रतिवंती आरति करै, रांम सनेही आव।
दादू औसर अब मिलै, यहु बिरहनि का भाव ॥१॥
सबद तुम्हारा ऊजला, चिरिया क्यौं कारी।
तुंहीं तुंहीं निसदिन करौं, विरहा की जारी ॥२॥
दादू इस संसार में, मुझसा दुखी न कोइ।
पीव मिलन के कारणैं, मैं जग भरिया रोइ ॥३॥
श्रवना राते नाद सौं, नैनां राते रूप।
जिभ्या राती स्वाद सौं, त्यौं दादू एक अनूप ॥४॥

१. रतिवंती=प्रेमपरा भक्ति में तन्मय जीवात्मा से आशय है। आरति=आर्ति; वेदनापूर्वक याचना।

२. ऊजला=उज्ज्वल, पवित्र।

४. राते=अनुरक्त। त्यौं दादू एक अनेक=वैसे ही दादू उस एक अद्वितीय अनुपम परमात्मा के प्रेम में रंग गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दादू इस हिवड़े ये साल, पिव पिव क्योंहि न जाइसी।
जब देखौं मेरा लाल, तब रोम रोम सुख आइसी ॥५॥
गई दसा तब बाहुड़ै, जे तुम प्रगटहु आइ।
दादू ऊजड़ सब बसै, दरसन देहु दिखाइ ॥६॥
दादू इसक अल्लाह का, जे कबहूँ प्रगटै आइ।
तौ तन मन दिल अरवाह का, सब पड़दा जलि जाइ ॥७॥
ग्यान ध्यान सब छाड़िदे, जप तप साधन जोग।
दादू बिरहा लै रहै, छाड़ि सकल रसभोग ॥८॥
दादू बिरह बिवोग न सहि सकौं, निसदिन सालै मोहि।
कोइ कहौ मेरे पीवकों, कब मुख देखौं तोहि ॥९॥
दादू चोट न लागी बिरह की, पीड़ न उपजी आइ।
जागि न रोवै धाह दे, सोवत गई बिहाइ ॥१०॥
अंदरि पीड़ न ऊभरै, बाहरि करै पुकार।
दादू सो क्योंकरि लहै, साहिब का दीदार ॥११॥
मनहीं मांहै झूरणा, रोवै मनहीं मांहि।
मनहीं मांहै धाह दे, दादू बाहरि नांहि ॥१२॥
दादू पाती प्रेम की, बिरला बाँचै कोइ।
वेद पुरान पुस्तक पढ़ै, प्रेम बिना क्या होइ ॥१३॥

---

५. हिवड़े=हृदय में। साल=पीड़ा, वेदना। क्योंहि न जाइसी=किसी-भी तरह नहीं जायगी। आइसी=आयगी, मिलेगी।

६. बाहुड़ै=लौट आयेगी।

७. अरवाह=रूहें, जीवात्माएँ।

९. सालै=कसकता है।

१२. झूरणा=जलना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रीति जु मेरे पीव की, पैठी पिंजर मांहि।
रोम रोम पिव पिव करै, दादू दूसर नांहि॥१४॥
राति दिवस का रोवणां, पहर पलक का नांहि।
रोवत रोवत मिलि गया, दादू साहिब मांहि॥१५॥
जब बिरहा आया दरद सौं, तब मीठा लागा राम।
काया लागी काल ह्वै, कड़वे लागे काम॥१६॥
दादू प्रीतम के पग परसिये, मुख देखण का चाव।
तहाँ ले सीस नवाइये, जहाँ धरे थे पाव॥१७॥

रज्जब

बिरहिण बिहरैं रैनदिन, बिन देखे दीदार।
जन रज्जब जलती रहै, जाग्या बिरह अपार॥१॥
बिरहा-पावक उर बसै, नखसिख जालैं देह।
रज्जब ऊपरि रहम करि बरसहु मोहन मेह॥२॥
भलका लाग्या भाव का, सेवक हुआ सुमार।
रज्जब तलफै तबलगें, मिलै न मारनहार॥३॥
जैसे नारी नाह बिन, भूली सकल सिंगार।
त्यूँ रज्जब भूल्या सकल, सुनि सनेह दिलदार॥४॥
रज्जब ज्वाला बिरह की, कबहूँ प्रगटै माँहि।
तौ सींचनि घृत सों चहौं, करम-काठ जरि जाँहि॥५॥
दरद नहीं दीदार का, तालिब नाहीं जीव।
रज्जब बिरह बिवोग बिन, कहाँ मिलै सो पीव॥६॥

१. बिहरैं=विछोह में तड़पती है।
५. भलका=भाला। सुमार=बिस्मार।
५. माँहि=मन्दिर में।
६. बिवोग=वियोग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बषना

चकोर अंगारे क्यूँ चुगे, चुगि देह जरावै।
कहि बषना किहिं कारणैं, कोई मरम लखावै ॥१॥
स्यौ बिभूति कबहूँ करै, लावै उस ठांई।
बषना मस्तक चन्द है, मिलि वाकै तांई ॥२॥

२. स्यौ=शिव। विभूति=भस्म। वाकैताई=उस (चन्द्र) के साथ।

सुन्दरदास

सुन्दर बिरहनि मरि रही, कहूँ न पइये जीव।
अंमृत पान कराइकै फेरि जिवावैं पीव ॥१॥
बिरह-बघूरा लै गयौ चित्तहि कहूँ उड़ाइ।
सुन्दर आवै ठौर तब, पीय मिलैं जब आइ ॥२॥
सुन्दर बिरहनि अधजरी, दुक्ख कहै मुख रोइ।
जरिबरिकैं भस्मी भई, धुवाँ न निकसै कोइ ॥३॥
सब कोई रलियाँ करैं, आयौ सरस बसंत।
सुन्दर बिरहनि अनमनी, जाकौ घर नांहि कंत ॥४॥
साइं तूँ ही तूँ करौं, क्यौंही दरस दिखाव।
सुन्दर बिरहनि यौं कहै, ज्यौंही त्यौंही आव ॥५॥
जिस विधि पीव रिझाइये, सो विधि जानी नांहि।
जोवन जाइ उतावला, सुन्दर यहु दुख मांहि ॥६॥

२. बघूरा=ववंडर। ठौर=अपना स्थान; शान्ति-पद।
४. रलियाँ=रंगरेलियाँ, मौज। अनमनी=उदास।
५. क्यौंही=किसीभी तरह। ज्यौं ही त्यों ही=कैसेभी हो।
६. जाइ उतावला=बड़ी जल्दी-जल्दी भाग रहा है। मांहि=मन में।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लालन मेरा लाड़िला, रूप बहुत तुझ माँहि।
सुन्दर राखै नैन मैं, पलक उघारै नाँहि ॥७॥
सुन्दर बिगसै बिरहनी, मन मैं भया उछाह।
फूल बिछाऊँ सेजरी, आज पधारैं नाह ॥८॥

७. पलक उघारै नाँहि=पलक इसलिए नहीं खोलती, कि कहीं आँखों के अन्दर से निकलकर भाग न जाये।
८. बिगसै=प्रफुल्लित होती हैं। नाह=स्वामी।

चरणदास

हिरदै माहीं प्रेम जो, नैनों झलकै आय।
सोइ छका हरि-रस-पगा, वा पग परसौ धाय ॥१॥
पीव बिना तो जीवना, जग में भारी जान।
पिया मिलै तौ जीवना, नहीं तो छूटै प्रान ॥२॥
वह बिरहिन बौरी भई, जानत ना कोइ भेद।
अगिन बरै हियरा जरै, भये कलेजे छेद ॥३॥

१. छका=मस्त। पगा=लीन, रँगा हुआ।
३. भेद=मर्म।

दया बाई

हँसि गावत रोवत उठत, गिरि-गिरि परत अधीर।
पै हरिरस-चसको दया, सहै कठिन तन पीर ॥१॥
विरह-ज्वाल उपजी हिये, राम-सनेही आय।
मन-मोहन मोहन सरल, तुम देखन दा चाय ॥२॥

१. चसको=चसका, मज़ा।
२. दा=का (पंजाबी प्रयोग)। चाय=चाह, लालसा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काग उड़ावत थके कर, नैंन निहारत बाट।
प्रेमसिन्ध में पर्यो मन, ना निकसन को घाट ।।३।।
रे मन, तू निकसत नहीं, है तू बड़ा कठोर।
सुन्दर स्याम सरूप बिन, क्यों जीवत निस-भोर ।।४।।

४. भोर==दिन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पतिव्रता का अंग

कबीरदास

कबीर प्रीतड़ी तौ तुझसौं, बहु गुणियाले कंत।
जै हँसि बोलौं और सौं, तौ नील रँगाऊँ दंत ॥१॥
नैनां अतंरि आव तूँ, ज्यूँ हौं नैन झँपेऊँ।
ना हौं देखौं औरकूँ, ना तुझ देखन देऊँ ॥२॥
कबीर रेख स्यंदूर की, काजल दिया न जाइ।
नैनूँ रमइया रमि रह्या, दूजा कहाँ समाइ ॥३॥
मन प्रतीति न प्रेमरस, ना इस तन मैं ढंग।
क्या जाणौं उस पीव सूँ, कैसैं रहसी रंग ॥४॥
पतिबरता मैली भली, काली कुचिल कुरूप।
पतिबरता के रूप पर, वारौं कोटि सरूप ॥५॥
पतिबरता पति कों भजै, और न आन सुहाय।
सिंह-बचा जो लंघना, तौ भी घास न खाय ॥६॥
पतिबरता मैली भली, गले कांच की पोत।
सब सखियन में यों दिपै, ज्यों रवि-ससि की जोत ॥७॥
सती बिचारी सत किया, काँटों सेज बिछाय।
लै सूती पिया आपना, चहुँदिस अगिन लगाय ॥८॥

---

१. नील रँगाऊँ दंत = मुँह काला करूँ, अपने आपको कलंक लगाऊँ।
२. झँपेउँ = मूँदलूँ।
४. कैसैं रहसी रंग = कैसे प्रेम रहेगा या मिलेगा।
५. कुचिल = मैले वस्त्रवाली।
६. बचा = बच्चा। लंघना = भूखा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दादूदयाल

दादू मेरे हिरदै हरि बसै, दूजा नांहीं और।
कहौ कहाँधौं राखिये, नहीं आन कौं ठौर ॥१॥
पतिब्रता गृह आपणै, करै खसम की सेव।
ज्यौं राखै त्यौंही रहै, आग्याकारी टेव ॥२॥
दादू नीच ऊँच कुल सुंदरी, सेवा सारी होइ।
सोई सुहागनि कीजिये रूप न पीजै धोइ ॥३॥
परपुरिखा सब परिहरै, सुन्दरि देखै जागि।
आपण पीव पिछाणकरि, दादू रहिये लागि ॥४॥
आन पुरिख हूँ बहनड़ी, परम पुरखि भर्त्तार।
हूँ अबला समझौं नहीं, तूं जाणैं कर्त्तार ॥५॥
दादू सारौं सौं दिल तोरिकरि, सांई सौं जोरै।
सांई सेती जोड़िकरि, काहेकौं तोरै ॥६॥
करामाति कलंक है, जाकै हिरदै एक।
अति आनन्द बिभचारिणी, जाकै खसम अनेक ॥७॥
साहिब का दर छाड़िकरि, सेवग कहीं न जाइ।
दादू बैठा मूल गहि, डालौं फिरै बलाइ ॥८॥

---

२. टेव=स्वभाव।
३. सेवा सारी होइ=यदि सेवा अच्छी हो। रूप······धोइ=केवल सुन्दर रूप का आदर नहीं किया जाता।
४. परिहरै=छोड़दे। रहिये लागि=प्रीति जोड़कर चिपट रहे।
५. वहनड़ी=वहन। भर्त्तार=स्वामी।
६. तबलगै=तबतक। परसै=प्रीति करे।
७. करामाति=चमत्कार। आनन्द=संसारी विषय-सुख।

.Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरणदास

पतिव्रता वहि जानिये, आग्या करै न भंग।
पिय अपने के रंग-रतै, और न सोहै ढंग ॥१॥
अपने पिय कूँ सेइये, आनपुरुष तजि देह।
परघर नेह निवारिये, रहिये अपने गेह ॥२॥
आग्याकारी पीव की, रहै पिया के संग।
तन मन सूँ सेवा करै, और न दूजो रंग ॥३॥
रंग होय तौ पीव को, आनपुरुष विषरूप।
छाँह बुरी परघरन की, अपनी भली जु धूप ॥४॥
अपने घर का दुख भला, परघर का सुख छार।
ऐसे जानै कुलबधू, सो सतवन्ती नार ॥५॥
पति की ओर निहारिये, औरन सूँ क्या काम।
सबै देवता छांडिकै, जपिये हरि का नाम ॥६॥
खसम तुम्हारे राम हैं, इत उत रुख मत मारि।
चरनदास यों कहत है, यही धारना धारि ॥७॥

५. छार=धूल के समान तुच्छ। सतवंती=सती, पतिव्रता।
७. रुख मत मारि=मन मत डिगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साध का अंग

कबीरदास

कबीर सोई दिन भला, जा दिन संत मिलाहिं।
अंक भरे भरि भेंटिया, पाप सरीरौं जाहिं ॥१॥
सिहों के लेंहडे नहीं, हंसों की नहिं पाँत।
लालों की नहिं बोरियाँ, साध न चलें जमात ॥२॥
साध कहावन कठिन है, लंबा पेड़ खजूर।
चढ़ै तो चाखै प्रेमरस, गिरै तो चकनाचूर ॥३॥
गाँठी दाम न बाँधई, नहिं नारी सों नेह।
कह कबीर ता साध की हम चरनन की खेह ॥४॥
बृच्छ कबहुँ नहिं फल भखैं, नदी न संचैं नीर।
परमारथ के कारने साधुन धरा सरीर ॥५॥
जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिए ग्यान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान ॥६॥
हद्द चलै सो मानवा, बेहद चले सो साध।
हद बेहद दोनों तजै, ता का मता अगाध ॥७॥
संत न छाड़ै संतई, जे कोटिक मिलैं असंत।
चंदन भुवंगा बैठिया, तउ सीतलता न तजंत ॥८॥

---

२. लेंहड़े = झुंड।
४. खेह = धूल।
५. संचैं = जमा करतीं हैं।
७. मानवा = मनुष्य।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कबीर हरि का भावता दूरैं थैं दीसंत।
तन षीणां मन उनमनां, जग रूठड़ा फिरंत ॥९॥
कबीर हरि का भावता, झीणां पंजर तास।
रैणि न आवै नींदडी, अंगि न चढ़ई मांस ॥१०॥

---

९. दीसंत=दीखता है; पहचान लिया जाता है। षीणां=क्षीण, कृश। उनमनां=उदासीन, अनासक्त। रूठड़ा=विरक्त।
१०. पंजर=देह।

शेख फरीद

मति होंदी होइ इआणा, ताण होंदे होइ निताणा।
अणहोंदे आपु वंडाए, कोई ऐसा भगतु सदाए।

प्रभु के ऐसे विरले ही भक्त हैं,—
जो, बुद्धिमान होते हुए भी, सरल हैं,
जो, बलवान होते हुए भी, निर्बल हैं,
और, जो अकिंचन होते हुए भी, अपना सर्वत्र दे डालते हैं।

दादू दयाल

साध-नदी, जल रामरस, तहाँ पखालै अंग।
दादू निर्मल, मल गया, साधूजन के संग ॥१॥
दादू पाया प्रेमरस, साधू-संगति माँहि।
फिरि फिरि देखै लोक सब, यहु रस कतहूँ नाँहि ॥२॥
दादू चन्दन कदि कह्या, अपना प्रेमप्रकास।
दस दिसि परगट ह्वै रह्या, सीतल गन्ध सुवास ॥३॥

---

१. पखालै=पखारे, धोये, निर्मल करे।
३. कदि=कब। दह=दस।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दादू पारस कदि कह्या, मुझ थी कंचन होइ।
पारस परगट ह्वै रह्या, साच कहै सब कोइ॥४॥
परउपगारी सन्त सब, आये इहि कलि माँहि।
पिवैं पिलावैं रामरस, आप सवारथ नाँहि॥५॥
चन्द सूर पावक पवन, पाणी का मत सार।
धरती अम्बर रातिदिन, तरवर फलैं अपार॥६॥
दादू इस संसार मैं, ये द्वै रतन अमोल।
इक सांईं अरु संतजन, इनका मोल न तोल॥७॥
साध सदा संजमि रहै, मैला कदे न होइ।
दादू पंक परसै नहीं, कर्म न लागै कोइ॥८॥
को साधू जन उस देस का, आया इहि संसार।
दादू उसको पूछिये, प्रीतम के समचार॥९॥
सबही मृत्तक ह्वै रहे, जीवैं कौन उपाइ।
दादू अंमृत रामरस, को साधू सींचैं आइ॥१०॥
हरिजल बरिखे, बाहिरा, सूके काया-खेत।
दादू हरिया होइगा, सींचणहार सुचेत॥११॥

---

५. सवारथ=स्वार्थ।

६. चन्द⋯⋯अपार=चन्द्र, सूर्य, अग्नि, पवन, जल, पृथ्वी, आकाश और वृक्ष सदा दूसरों के लिए ही अपनी अखूट सम्पत्ति लुटाते रहते हैं—अथवा, 'परोपकाराय सतां विभूतयः'।

८. संजमि=संयमी, निर्मल। पंक=कर्म की आसक्ति से आशय है।

११. हरिजल⋯⋯सचेत=यदि सींचनेवाला साधक सचेत हो, तो हरि-जल के बरसते ही जिन कायारूपी खेतों को काम-क्रोध के उष्ण वायु ने सुखा दिया था, वे हरे हो जायेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विष का अंमृत करि लिया, पावक का पाणी।
बांका सूधा करि लिया, सो साध बिनाणी ॥१२॥
दादू ऊरा पूरा करि लिया, खारा मीठा होइ।
फूटा सारा करि लिया, साध बमेकी सोइ ॥१३॥

१२. बिनाणी=विज्ञानी।
१३. ऊरा=अधूरा। सारा=सावत, अखण्ड। बमेकी=विवेकी।

गुरु तेगबहादुर

सुख दुख जिह परसै नहीं, लोभ मोह अभिमानु।
कहु नानक सुन रे मना, सो मूरत भगवान ॥१॥
उसतति निंदा नाहिं जिहि, कंचन लोह समान।
कहु नानक सुन रे मना, मुकत ताहि तैं जानि ॥२॥
हरष सोग जाके नहीं, बैरी मीत समान।
कहु नानक सुन रे मना, मुकत ताहि तैं जानि ॥३॥
भै काहूकउ देत नहिं, नहिं भै मानत आनि।
कहु नानक सुन रे मना, गिआनी ताहि बखानि ॥४॥
जिहि माइआ ममता तजी, सभते भइओ उदास।
कहु नानक सुन रे मना, तिह घटि ब्रह्म-निवास। ॥५॥

१. परसै नहीं=छू भी नहीं गया।
२. उसतति=स्तुति, प्रशंसा। मुकत=जीवन्मुक्त।
४. आनि=दूसरों से।
५. माइआ=माया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रज्जब

छाजन भोजन दे भगवंत, अधिक न बाछैं साधूसंत।
रज्जब यह संतोषी चाल, माँगहिं नाहिं मुलक औ माल ॥१॥
जबलगि तुझमें तू रहै, तबलगि वह रस नाहिं।
रज्जब आपा अरपिदे, तौ आवै हरि माँहि ॥२॥

---

१. छाजन = वस्त्र। बाछैं = चाहते हैं।
२. आपा = अहंता, खुदी। अरपिदे = सौंपदे।

सुन्दरदास

संत मुक्ति के पौरिया, तिनसौं करिये प्यार।
कूँजी उनकै हाथ है, सुंदर खोलहिं द्वार ॥१॥
मात पिता सबही मिलैं, भइया बंधु प्रसंग।
सुन्दर सुत दारा मिलैं, दुर्लभ है सतसंग ॥२॥
मद मत्सर अहंकार की दीन्हीं ठौर उठाइ।
सुन्दर ऐसे संतजन, ग्रंथनि कहे सुनाइ ॥३॥
आयें हर्ष न ऊपजै, गयें सोक नहिं होइ।
सुन्दर ऐसे संतजन, कोटिनु मध्ये कोइ ॥४॥
सुखदाई सीतल हृदय, देखत सीतल नैन।
सुन्दर ऐसे संतजन, बोलत अंमृत बैंन ॥५॥
क्षमावन्त धीरज लिये, सत्य दया संतोष।
सुन्दर ऐसे संतजन, निर्भय निर्गतरोष ॥६॥

---

१. पौरिया = द्वारपाल, पहरेदार।
४. आयें = प्राप्त होने पर।
६. निर्गत = विगत, रहित।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घर बन दोऊ सारिखे, सबतें रहत उदास।
सुन्दर संतनि कैं नहीं, जिवन मरन की आस ॥७॥
धोवत है संसार सब, गंगा मांहें पाप।
सुन्दर संतनि के चरण, गंगा बंछै आप ॥८॥
संतनि की सेवा किये, सुन्दर रीझै आप।
जाकौ पुत्र लड़ाइये, अति सुख पावै बाप ॥९॥

---

७. उदास=उदासीन, तटस्थ।
८. बंछै=चाहती है।
९. आप =स्वयं परमात्मा। लड़ाइये=प्यार करे।

दरिया साहब (मारवाड़वाले)

दरिया लच्छन साध का, क्या गिरही क्या भेख।
निःकपटी निरसंक रहि, बाहर भीतर एक ॥१॥
सत्त सब्द सत गुरमुखी, मत गजंद-मुखदंत।
यह तो तोड़ै पौलगढ़, वह तोड़ै करम अनंत ॥२॥
दाँत रहै हस्ती बिना, पौल न टूटै कोय।
कै कर धारै कामिनी, कै खेलाराँ होय ॥३॥
मतबादी जानै नहीं ततबादी की बात।
सूरज ऊगा उल्लुवा, गिनै अँधारी रात ॥४॥

---

१. गिरही=गृहस्थ। भेख=वैरागी।
२. मत=मत्त, मतवाला। पौलगढ़=किले की ड्योढ़ी का फाटक।
३. दाँत रहै हस्ती बिना=यदि हाथी का दाँत हो, पर हाथी न हो; साधना के पक्ष में यह अर्थ होगा, कि यदि इन्द्रियों और मन का दमन न किया हो, केवल वाचनिक साधना हो। खेलाराँ=खिलौना।
४. मतवादी=भिन्न-भिन्न शास्त्रों के सिद्धान्तों की बात करनेवाले। तत-वादी=तत्त्ववादी, शुद्ध आत्मज्ञानी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीखत ग्यानी ग्यान गम, करै ब्रह्म की बात।
दरिया बाहर चाँदनी, भीतर काली रात ॥५॥

चरणदास

जग माहीं न्यारे रहो, लगे रहो हरि-ध्यान।
प्रथिवी पर देही रहै, परमेसुर में प्रान ॥१॥
सब सूँ रख निरबैरता, गहो दीनता ध्यान।
अंत मुक्ति-पद पाइहौ, जग में होय न हानि ॥२॥
दया, नम्रता, दीनता, छिमा, सील, संतोष।
इनकूँ लै सुमिरन करै, निस्चय पावै मोष ॥३॥
प्रथिवी पावन होत है, सब ही तीरथ आदि।
चरनदास हरि यौं कहैं, चरन धरैं जहँ साध ॥४॥

---

१. न्यारे=अनासक्त।
३. मोष=मोक्ष।

सहजोबाई

निर्दुन्दी निर्बैरता, सहजो अरु निर्बास।
संतोषी निर्मल दसा, तकै न पर की आस ॥१॥
जो सोवैं तो सुन्न में, जो जागै हरिनाम।
जो बोलैं तो हरि-कथा, भक्ति करै निहकाम ॥२॥
नित ही प्रेम-पगे रहैं, छके रहैं निजरूप।
समदृष्टी सहजो कहै, समझैं रंक न भूप ॥३॥

---

१. निर्वास=वासनारहित। निर्दुन्दी=अभेदभाव बर्तनेवाला।
२. सुन्न में=समाधि में।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साध असंगी सँग तजैं, आतम ही को संग।
बोधरूप आनन्द में, पियैं सहज को रंग ॥४॥
मुए दुखी जीवत दुखी, दुखिया भूख अहार।
साध सुखी सहजो कहै, पायो नित्त बिहार ॥५॥
साध मिले गुरु पाइया, मिटि गये सब सन्देह।
सहजो कूँ समही भयो, कहा गिरवर कहा गेह ॥६॥
साध वृच्छ, बानी कली, चर्चा फूले फूल।
सहजो संगति बाग में, नाना फल रहे झूल ॥७॥
जो आवै सतसंग में, जाति बरन कुल खोय।
सहजो मैल कुचैल जल, मिलै सु गंगा होय ॥८॥

---

४. असंगी=अनासक्त। संग=आसक्ति। बोध=ज्ञानरूप। सहज को रंग=सहज अवस्था का आनन्दरस।
५. नित्त विहार=सहज समाधि का आनन्द।
६. सम=समत्व।

दयाबाई

दया दान अरु दीनता, दीना-नाथ दयाल।
हिरदै सीतल दृष्टि सम, निरखत करैं निहाल ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ नहिं, षट विकार करि हीन।
पंथ कुपंथ न जानहीं, ब्रह्मभाव-रस-लीन ॥२॥
साधसंग छिन एक को, पुन्न न बरन्यो जाय।
रति उपजै हरिनाम सूँ, सबही पाप बिलाय ॥३॥

---

२. षट विकार=मन के छह दोष—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य। करि=से।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधू बिरला जगत में, हर्ष सोक करि हीन।
कहन सुनन कूँ बहुत हैं, जन-जन आगे दीन ॥४॥
साधसंग जग में बड़ो, जो करि जानै कोय।
आधो छिन सतसंग को, कलमष डारै खोय ॥५॥

४. रति=प्रीति।
५. कलमष=पाप।

पलटूदास

पलटू हरिजन मिलन को, चलि जइये इक धाप।
हरिजन आये घर महँ, तो आये हरि आप ॥१॥
पलटू तीरथ को चला, बीच मां मिलिगे संत।
एक मुक्ति के खोजते, मिलि गइ मुक्ति अनंत ॥२॥
सीस नवावै संत को, सीस बखानौं सोय।
पलटू जे सिर ना नवै, बेहतर कद्दू होय ॥३॥

१. धाप=टप्पा, एक साँस में जितना लम्बा दौड़ा जा सके; उमंग से उतावला होकर।
३. बखानौं=असल में उसीको कहता हूँ। कद्दू=कुम्हड़ा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शूरातन का अंग

कबीरदास

गगन दमामां बाजिया, पड्या निसानैं घाव।
खेत बुहार्‌या सूरिवैं, मुझ मरणे का चाव ।।१।।
सूरा तबहीं परषिये, लड़ै धणीं कै हेत।
पुरिजा-पुरिजा ह्वै पड़ै, तऊ न छाड़ै खेत ।।२।।
अब तौ झूझ्यां हीं बणैं, मुड़ि चाल्यां घर दूरि।
सिर साहिब कौं सोंपतां, सोच न कीजै सूर ।।३।।
कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नांहि।
सीस उतारै हाथि करि, सो पैसै घर मांहि ।।४।।
प्रेम न खेतौं नीपजै, प्रेम न हाटि बिकाइ।
राजा परजा जिस रुचै, सिर दे सो ले जाइ ।।५।।
भगति दुहेली राम की, जसि खांडे की धार।
जे डोलै तौ कटि पड़ै, नहीं तौ उतरै पार ।।६।।
भगति दुहेली राम की, जैसि अगनि की झाल।
डाकि पड़े ते ऊबरे, दाधे कौतिगहार ।।७।।

---

१. दमामां=नगाड़ा। पड्या निसांनै घाव=डंके पर चोट पड़ी। सूरिवैं =शूरवीरों ने।

२. पुरिजा-पुरिजा=टुकड़ा-टुकड़ा।

३. झूझ्यां ही वणैं=जूझना ही होगा।

४. खाला=मौसी। पैसे=पैठे।

७. झाल=ज्वाला। डाकि पड़े=फाँद जाये, लाँघ जाये। कौतिगहार= तमाशा देखनेवाले।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिर राखे सिर जात है, सिर काटे सिर सोय।
जैसे बाती दीप की, कटि उंजियारा होय ॥८॥
खोजी को डर बहुत है, पल-पल पड़ै बिजोग।
प्रन राखत जो तन गिरै, सो तन साहेबजोग ॥९॥

---

९. बिजोग=वियोग।

दादूदयाल

जे मुझ होते लाख सिर, तौ लाखौं देती वारि।
सह मुझ दीया एक सिर, सोई सौंपै नारि ॥१॥
पीछैं कौं पग ना भरै, आगैं कौं पग देइ।
दादू यहु मत सूर का, अगम ठौर कौं लेइ ॥२॥
जे सिर सौंप्या राम कौं, सो सिर भया सनाथ।
दादू दे ऊरण भया, जिसका तिसकै हाथ ॥३॥
सिर कै साटै लीजिये, साहिबजी का नांव।
खेलै सीस उतारिकरि, दादू मैं बलि जांव ॥४॥
दादू मरणा खूब है, मरि मांहै मिलि जाइ।
साहिब का संग छांड़िकरि, कौन सहै दुख आइ ॥५॥
दादू जे तूँ प्यासा प्रेम का, तौ जीवन की क्या आस।
सिर कै साटै पाइये, सो भरि भरि पीवै दास ॥६॥

---

१. सह=स्वामी।
२. भरै=रखता है।
३. ऊरण=ऋणमुक्त।
४. साटै=सौदे में, बदले में।
५. माहें=(परमात्मा) में।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दादू जे तूं प्यासा प्रेम का, तौ किसकौं सैंतै जीव।
सिर कै साटै लीजिये, जे तुझ्झ प्यारा पीव ॥७॥

७. सैंतै=बचाकर रखता है।

दरिया साहब (मारवाड़वाले)

दरिया साँचा सूरमा, सहै सब्द की चोट।
लागत ही भाजै भरम, निकस जाय सब खोट ॥१॥
सबहि कटक सूरा नहीं, कटक माँहि कोइ सूर।
दरिया पड़ै पतंग ज्यों, जब बाजै रन तूर ॥२॥
दरिया प्रेमी आत्मा, रामनाम धन पाया।
निरधन था धनवँत हुआ, भूला घर आया ॥३॥
सूर न जानै कायरी, सूरातन से हेत।
पुरजा-पुरजा हो पड़ै, तहू न छांड़ै खेत ॥४॥
दरिया सो सूरा नहीं, जिन देह करी चकचूर।
मन को जीत खड़ा रहै, मैं बलिहारी सूर ॥५॥

२. कटक=सेना। तूर=तुरही, रण में बजाने का एक वाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है।
४. पुरजा-पुरजा=टुकड़ा-टुकड़ा।

पलटूदास

लगा जिकर का बान है, फिकर भई छैकार।
पुरजे-पुरजे उड़ि गया, पलटू जीति हमार ॥१॥
बखतर पहिरे प्रेम का, घोड़ा है गुरुज्ञान।
पलटू सुरति कमान लै, जीति चले मैदान ॥२॥

१. जिकर=नाम-स्मरण, सुरति, लय। छैकार=नष्ट।
२. बखतर=कवच। कमान=धनुष।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोइ सिपाही मरद है, जग में पलटूदास।
मन मारै सिर गिरि पड़ै, तन की करै न आस ॥३॥

दयाबाई

गुरु-सब्दनकूँ ग्रहन करि, बिषयनकूँ दे पीठ।
गोबिंदरूपी गदा गहि, मारो करमन डीठ[1] ॥१॥
सूरा वही सराहिये, बिन सिर लड़त कबंद[2]।
लोक-लाज कुलकानकूँ, तोड़ि होत निरबंद ॥२॥
सूरा सन्मुख समर में, घायल होत निसंक।
यों साधू संसार में, जग के सहै कलंक ॥३॥
कायर काँपै देख करि, साधू को संग्राम।
सीस उतारै भुइँ धरै, तब पावै निज ठाम[4] ॥४॥

१. डीठ=दृष्टि; बुरी नज़र।
२. कवंद=कबंध; विना सिर का केवल धड़। निरबंद=बंधनरहित, मुक्त।
४. ठाम=स्थान; लक्ष्य।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सांच का अंग

कबीरदास

लेखा देणां सोहरा, जे दिल सांचो होइ।
उस चंगे दीवांन मैं, पला न पकड़ै कोइ ॥१॥
साँईं सेती चोरियां, चोरां सेती गुझ।
जाणैंगा रे जीवड़ा, मार पड़ैगी तुझ ॥२॥
प्रेम-प्रीति का चोलना, पहिरि कबीरा नाच।
तन मन तापर वारहूँ, जो कोई बोलै सांच ॥३॥
सांच कहूँ तो मारिहैं, झूठे जग पतियाइ।
ये जग काली कूकरी, जो छेड़ै तो खाइ ॥४॥
कबीर लज्या लोक की, सुमिरै नाहीं सांच।
जानि बूझि कंचन तजै, काठा पकड़ै कांच ॥५॥
सांचे स्राप न लागई, सांचे काल न खाइ।
सांचे को सांचा मिलै, सांचे माँहि समाइ ॥६॥
झूठे कों झूठा मिलै, दूणां वधै सनेह।
झूठे कूँ सांचा मिलै, तबही तूटै नेह ॥७॥

---

१. सोहरा=सहल। दीवांन=दरबार, न्यायालय।
२. गुझ=गुह्य, गुप्तभेद या सलाह।
४. पतियाय=विश्वास कर लेता है। कूकरी=कुतिया। खाइ=काट खाती है।
६. सांचे माँहि समाइ=सत्यरूप परमात्मा में लीन हो जाता है।
७. दूणां=दुगुना। वधै=बढ़ता है। तूटै=टूट जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साँच बिना सुमिरन नहीं, भय बिन भक्ति न होइ।
पारस में पड़दा रहै, कंचन केहि विधि होइ ॥८॥
सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै सांच है, ताके हिरदै आप ॥९॥
सांचे कोई न पतीजई, झूठे जग पतियाइ।
गली गली गोरस फिरै, मदिरा बैठि बिकाइ ॥१०॥
सबसे सांचा है मिला, जो सांचा दिल होइ।
सांच बिना सुख नाहिंना, कोटि करै जो कोइ ॥११॥

---

८. पड़दा=पर्दा; अंतर।
९. आप=परमेश्वर।
११. कोटि करै=करोड़ों उपाय करने पर भी।

दादूदयाल

अंतरगति औरे कछू मुख रसना कुछ और।
दादू करणी और कुछ, तिनकों नाहीं ठौर ॥१॥
सोइ जन सांचे सो सती, साधक सोइ सुजान।
सोइ ग्यानी सोइ पंडित, जो राते भगवान ॥२॥
दादू पद जोड़ै साखी कहै, विषै न छाड़ै जीव।
पानी घालि बिलोइये, क्योंकर निकसै घीव ॥३॥

---

१. रसना=ज़बान, वाणी। ठौर=विश्वास।
२. राते=अनुरक्त, भक्त।
३. जोड़ै=रचना करता है। घालि=बर्तन में डालकर। बिलोइये=मथे। घीव=घी।

दरिया साहब (मारवाड़वाले)

कानों सुनी सो झूठ सब, आँखों देखी सांच।
दरिया देखे जानिये, यह कंचन यह काँच ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीनती का अंग

कबीरदास

तुम तो समरथ साँइयाँ, दृढ़करि पकरो बाँहि।
धुरही लै पहुँचाइयो, जनि छाँड़ो मग माँहि ॥१॥
करता केरे बहुत गुण, औगुण कोई नाँहि।
जे दिल खोजौं आपणा, तौ सब औगुण मुझ माँहि ॥२॥
ज्यूँ मन मेरा तुझ सौं, यौं जे तेरा होइ।
ताता लोहा यौं मिलै, संधि न लखई कोइ ॥३॥
सुरति करौ मेरे साँइयाँ, हम हैं भवजल माँहि।
आपेही बहि जाँहिगे, जो नँहि पकरौ बाँहि ॥४॥
क्या मुख लै बिनती करौं, लाज आवत है मोंहि।
तुम देखत औगुण करौं, कैसे भावों तोंहि ॥५॥
अवगुन मेरे बापजी, बकस गरीब-निवाज।
जो मैं पूत कपूत हौं, तऊ पिता कों लाज ॥६॥
मन परतीति न प्रेमरस, ना कछु तन में ढंग।
ना जानौं उस पीव से, क्योंकरि रहसी रंग ॥७॥
मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कछु है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागत है मोर ॥८॥

---

१. धुरही = ठिकाने पर ही।
२. करता = परमेश्वर।
३. ताता = गरम। सधि = जोड़।
५. औगुण = अपराध, पाप।
७. रहसी रंग = प्रीति निभेगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दादू दयाल

तिल तिल का अपराधी तेरा, रती रती का चोर।
पल पल का मैं गुनही तेरा, बकसहु औगुण मोर ॥१॥
राखणहारा राख तू, यहु मन मेरा राखि।
तुम बिन दूजा को नही, साधू बोलैं साखि ॥२॥
माया बिषै बिकार थैं, मेरा मन भागै।
सोई कीजै सांइयां, तूं मीठा लागै ॥३॥
सांई दीजै सो रती, तूं मीठा लागै।
दूजा खारा होइ सब, सूता जीव जागै ॥४॥
ज्यौं आपै देखै आपकौं सो नैना दे मुझ।
मीराँ मेरा मेहर कर, दादू देखै तुझ ॥५॥
नांहीं परगट ह्वै रह्या, है सो रह्या लुकाइ।
सांइयां पड़दा दूरि कर तू ह्वं परगट आइ ॥६॥
जिनकी रख्या तू करै, ते उबरैं करतार।
जे तैं छाड़े हाथ थैं, ते डूबे संसार ॥७॥
दादू दौ लागी जग परजलै, घटि घटि सब संसार।
हम थैं कछू न होत है, तुम बरसि बुझावणहार ॥८॥

---

१. गुनही = गुनाह याने अपराध करनेवाला।
४. खारा = फीका।
५. ज्यों आपै देखै आपकौं = जिन अन्तर की आँखों से अपने 'स्वरूप' को देख सकूँ।
६. रह्या लुकाइ = छिप रहा है।
८. दौ = जंगल की आग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुमहीं थैं तुम्हकूं मिलै, एक पलक मैं आइ।
हम थैं कबहु न होइगा, कोटि कलप जे जाइ ॥९॥
खुसी तुम्हारी त्यूं करौं, हम तो मानी हारि।
भावै बन्दा बकसिये, भावै गहिकरि मारि ॥१०॥

९. तुमहीं थैं तुम्हकूँ मिलै=तुम्हारी कृपा से ही तुमसे हम मिल सकते हैं। जे जाइ=यदि बीत जायें; बीत जाने पर भी।
१०. भावै बंदा बकसिये=चाहे तो इस सेवक को माफ़ करदो।

रज्जब

आदि अन्त मधि हम बुरे. हम ते भला न होय।
रज्जब ज्यूँ साहिब खुशी, सो लच्छन नहिं कोय ॥१॥
तुम जोगी सेवक नहीं, मैं मंदभागी करतार।
रज्जब गुण नहिं बापजी, बहुत किये विभचार ॥२॥
सकल पतित पावन किये, अधम-उधारनहार।
बिरद बिचारौ बापजी, जन रज्जब की बार ॥३॥
जे तुम राम बुलायल्यौ, तौ रज्जब मिलसी आय।
जथा पवन परसंगि ते गुड़ी गगन कूँ जाय ॥४॥
भला बुरा जैसा किया, तैसा निपज्या जीव।
यह तुम्हरा तुमकूँ मिल्या, तुम क्यूं मिले न पीव ॥५॥

२. तुम जोगी=तुम्हारे योग्य।
४. परसंगि=साथ में। गुडी=पतंग।
५. निपज्या=पैदा हुआ।

दयाबाई

किस बिधि रीझत हो प्रभू, का कहि टेरूँ नाथ।
लहर मेहर जबहीं करो, तबहीं होउँ सनाथ ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवजल नदी भयावनी, किस बिधि उतरूँ पार।
साहिब मेरी अरज है, सुनिये बारम्बार ॥२॥
तुम ठाकुर त्रैलोक-पति, ये ठग बस करि देहु।
दयादास आधीन की, यह बिनती सुनि लेहु ॥३॥
नहिं संजम नहिं साधना, नहिं तीरथ ब्रत दान।
मात-भरोसे रहत है, ज्यों बालक नादान ॥४॥
लाख चूक सुत तें परें, सो कछु तजि नहिं देह।
पोष चुचुक ले गोद में, दिन दिन दूनो नेह ॥५॥
चकई कल में होत है, भान-उदय आनन्द।
दयादास के दृगन तें, पल न टरो ब्रजचन्द ॥६॥
बड़े-बड़े पापी अधम, तरत लगी न बार।
पूँजी लगै कछु नन्द की, हे प्रभु, हमरी बार ॥७॥
तुमहीं सूँ टेका लगो, जैसे चन्द्र चकोर।
अब कासूँ झंखा करौं, मोहन नन्दकिसोर ॥८॥
कब को टेरति दीन ह्वै, सुनो न नाथ, पुकार।
की सरवन ऊँची सुनो, की दीन्हों बिरद बिसार ॥९॥

---

५. चुचुक=चुमकारकर।
६. कल=चैन।
७. नंद की=श्रीकृष्ण के अभिभावक नंद बाबा; क्या मुझे तारने में तुम्हारे बाप की पूंजी खर्च होती है ?
८. टेका=टेक। झंखा=झीखना, कुढ़ना।
९. बिरद=बाना; बड़ा नाम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माया का अंग

कबीरदास

कबीर माया मोहनी, सब जग घाल्या घाणि।
कोई एक जन ऊबरै, जिनि तोड़ी कुल की काणि॥१॥
माया मुई न मन मुवा, मरि-मरि गया सरीर।
आसा त्रिसणां नां मुई, यूँ कहि गया कबीर॥२॥
कबीर सो धन संचिये, जो आगें कूँ होइ।
सीस चढायें पोटली, ले जात न देख्या कोइ॥३॥
माया की झल जग जल्या, कनक कामिणीं लागि।
कहुधौं किहि बिधि राखिये, रुई-लपेटी आगि॥४॥
माया छाया एक सी, बिरला जानै कोय।
भगतां के पीछैं फिरै, सनमुख भागै सोय॥५॥
माया तो है राम की, मोदी सब संसार।
जाको चिट्ठी ऊतरी, सोई खरचनहार॥६॥
आँधी आई ग्यान की, ढही भरम की भीति।
माया टाटी उड़ि गई, लागी नाम से प्रीति॥७॥

---

१. काणि = झूठी मर्यादा, आसक्ति।
३. पोटली = गठरी।
४. झल = ज्वाला।
६. मोदी = व्यापारी।
७. भीति = दीवार।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दादूदयाल

दादू माया का सुख पंचदिन, गर्ब्यो कहा गंवार ।
सुपनें पायौ राजधन, जात न लागै बार ।।१।।
मन की मूठि न मांडिये, माया के नीसाण ।
पीछैं ही पछताहुगे, दादू खोटे बाण ।।२।।
दादू नगरी चैन तब, जब इक राजी होइ ।
दोइ राजी दुख दुंद में, सुखी न बैसे कोइ ।।३।।
ज्यौं घुन लागै काठ कौं, लोहै लागै काट ।
काम किया घट जाजरा, दादू बारह बाट ।।४।।
साँपणि इक सब जीव कौं, आगै पीछै खाइ ।
दादू कहि उपगार करि, कोइ जन ऊबरि जाइ ।।५।।
दादू माया कारणि जग मरै, पीव के कारणि कोइ ।
देखौ ज्यौं जग परजलै, निमष न न्यारा होइ ।।६।।
सुर नर मुनियर बस किये, ब्रह्मा विश्न महेस ।
सगल लोक के सिर खड़ी, साधू के पग हेठ ।।७।।
दादू माया चेरी सन्त की, दासी उस दरबारि ।
ठकुराणी सब जगत की, तीन्यूं लोक मंझारि ।।८।।
दादू जेहि घट ब्रह्म न प्रगटै, तहँ माया मंगल गाइ ।
दादू जागै जोति जब, तब माया भरम बिलाइ ।।९।।

---

३. इक राजी = केवल एक राजा का राज्य । दोइ राजी = एकसाथ दो-दो राजाओं के राज्य ।

४. काट = मोरचा, जंग । जाजरा = जर्जर । बारह बाट = सत्यानाश ।

७. मुनियर = मुनिवर । हेठ = नीचे दबी पड़ी है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माता नारी पुरिख की, पुरिख नारि का पूत।
दादू ग्यान बिचारिकरि, छाड़ि गये अवधूत ॥१०॥
सूरजि फटकि पषाण का, तासौं तिमर न जाइ।
साचा सूरिज परगटै, दादू तिमिर नसाइ ॥११॥
मूरति घड़ी पखाण की, कीया सिरजनहार।
दादू साच सूझै नहीं, यूँ डूबा संसार ॥१२॥
माया सांपणि सब डसै, कनक कामणी होइ।
ब्रह्मा विश्न महेस लौं, दादू बचै न कोइ ॥१३॥

---

१०. अवधूत = विशुद्धात्मा, मुक्तपुरुष।
११. फटिक = स्फटिक, बिल्लौर।
१२. घड़ी = बनाई। कीया = रचा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन का अंग

कबीरदास

कबीर मारूं मन कूं, टूक-टूक ह्वै जाइ।
विष की क्यारी बोइकरि लुणत कहा पछिताइ ॥१॥
हिरदा भीतरि आरसी, मुख देषणां न जाइ।
मुख तौ तौपरि देखिए, जे मन की दुबिधा जाइ॥२॥
मैंमंता मन मारि रे, घटहीं मांहैं घेरि।
जबही चालै पीठि दे, अंकुस दे-दे फेरि ॥३॥
मैंमंता मन मारि रे, नांन्हां करि-करि पीसि।
तब सुख पावै सुन्दरी, ब्रह्म झलक्कै सीसि ॥४॥
मन-मुरीद संसार है, गुरु-मुरीद कोइ साध।
जो मानै गुरु-बचन को, ताको मता अगाध ॥५॥
मन के मारे बन गये, बन तजि बस्ती माँहि।
कह कबीर क्या कीजिए, यह मन ठहरै नाँहि ॥६॥
पहले यह मन काग था, करता जीवन-घात।
अब तो मन हंसा भया, मोती चुगि-चुगि खात ॥७॥
अपने-अपने चोर को, सब कोइ डारै मार।
मेरा चोर मुझे मिलै, सरबस डारूं वार ॥८॥

१. लुणत=फसल काटते हुए।
२. आरसी=दर्पण।
३. मैंमंता=मतवाला (हाथी)
५. मुरीद=शिष्य। मता=सिद्धान्त।
८. मेरा चोर=मेरा प्रियतम, जिसने मन को हर लिया है। डारूं वार=न्योछावर करदूं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कबिरा मनहिं गयंद है, आंकुस दै-दै राखु।
विष की बेली परिहरी, अंमृत का फल चाखु ॥९॥
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
कह कबीर पिउ पाइए मनहीं की परतीत ॥१०॥

---

९. विष की बेली=विषय-भोग से आशय है।

दादू दयाल

कीया मन का भावता, मेटी आग्याकार।
क्या ले मुख दिखलाइये, दादू उस भरतार ॥१॥
दादू पंचौं का मुख मूल है, मुख का मनुवां होइ।
यह मन रोकै जतनकरि, साध कहावै सोइ ॥२॥
अगनि धोम ज्यों नीकलै, देखत सबै बिलाइ।
त्यौं मन बिछुट्या रांम सौं, दह दिसि बीखरि जाइ ॥३॥
तन में मन आवै नहीं, चंचल चहुँ दिसि जाइ।
दादू मेरा जिव दुखी, रहै न रांम समाइ ॥४॥
कोटि जतन करि करि मुये, यहु मन दह दिसि जाइ।
रांम नांम रोक्या रहै, नांहीं आन उपाइ ॥५॥
दादू जिसका दर्पण ऊजला, सो दर्पण देखै मांहि।
जिसकी मैली आरसी, सो मुख देखै नांहि ॥६॥

---

१. भरतार=स्वामी; परमात्मा से तात्पर्य है।
२. मूल=प्रधान। पंचों का=पांच इंद्रियों का।
३. धोम=धुवाँ। बिलाइ=लुप्त हो जाता है। बिछुट्या=बिछड़ा, अलग पड़ गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वरतणि एकै भांति सब, दादू संत असंत।
भिन्न भाव अन्तर घणा, मनसा तहँ गच्छंत ॥७॥

७. वरतणि=ऊपरी चेष्टा। मनसा तहँ गच्छंत=वहाँ मन कहाँ जा रहा है यह देखा जाता है।

सुन्दरदास

मन कौं राखत हटकिकरि, सटकि चहूँ दिसि जाइ।
सुंदर लटकि रु लालची, गटकि विषैफल खाइ ॥१॥
सुंदर क्योंकरि धीजिये, मन कौ बुरो सुभाव।
आइ बनै गुदरै नहीं, खेलै अपनौं दाव ॥२॥
सुंदर यहु मन भाँड़ है, सदा भँडायौ देत।
रूप धरै बहु भाँति कै, राते पीरे सेत ॥३॥
सुंदर आसन मारिकै, साधि रहे मुख मौन।
तन कौं राखै पकरिकै, मन पकरै कहि कौन ॥४॥
तन कौ साधन होत है, मन कौ साधन नाँहि।
सुंदर बाहर सब करै, मन साधन मन मांहि ॥५॥
मन ही बड़ौ कपूत है, मन ही महा सपूत।
सुंदर जो मन थिर रहै, तौ मन ही अवधूत ॥६॥
जब मन देखै जगत कौं, जगतरूप ह्वै जाइ।
सुंदर देखै ब्रह्म कौं, तब मन ब्रह्म समाइ ॥७॥

१. सटकि जाइ=हाथ से छूट जाता है।
२. धीजिये=विश्वास करे। गुदरै नहीं=किसी तरह मानता नहीं है।
३. राते पीरे=लाल और पीले।
६. अवधूत=पहुँचा हुआ ब्रह्मज्ञानी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुंदर परम सुगन्ध सौं, लपटि रह्यौ निश-भोर।
पुण्डरीक परमातमा, चंचरीक मन मोर ॥८॥

---

८. भोर = दिन। पुण्डरीक = कमल।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भ्रम-विध्वंस का अंग

कबीरदास

मन मथुरा दिल द्वारिका, काया कासी जाणि।
दसवां द्वारा देहुरा, तामें जोति पिछाणि ॥१॥
कबीर दुनियां देहुरै, सीस नवावण जाइ।
हिरदा भीतरि हरि बसैं, तूँ ताही सूँ ल्यौ लाइ ॥२॥
पाथर ही का देहुरा, पाथर ही का देव।
पूजणहारा अंधला, लागा खोटी सेव ॥३॥
पाहण पूजे हरि मिलै, तौ मैं पूजूँ पहार।
वासे तो चाकी भली, पीसि खाय संसार ॥४॥
कबीर माला मन की, और संसारी भेष।
माला पहर्‌यां हरि मिले तो अरहट के गलि देख ॥५॥

---

१. दसवाँ द्वार=ब्रह्म-रंध्र से आशय है। देहुरा=देवालय।
२. ल्यौ=लौ, प्रीति।
३. खोटी सेव=झूठी सेवा-पूजा।
५. अरहट=रहँट। गलि=गले में।

दादूदयाल

दादू जिन कंकर पत्थर सेविया, सो अपना मूल गँवाइ।
अलख देव अंतरि बसै, क्या दूजी जागह जाइ ॥१॥

---

१. जागह=जगह; तीर्थस्थान।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पत्थर पीवैं धोइकरि, पत्थर पूजैं प्राण।
अन्तिकालि पत्थर भये, बहु बूढ़े इहि ग्यान ॥२॥
दादू केई दौड़ें द्वारिका, केई कासी जाँहि।
केई मथुरा कौं चले, साहिब घटहीं माँहि ॥३॥
जे पहुँचे ते कहि गये, तिनकी एकै बात।
सबै सयाने एकमत, उनकी एकै जात ॥४॥
जे पहुँचे ते पूछिये, तिनकी एकै बात।
सब साधौं का एकमत, बिच के बारह बाट ॥५॥

---

२. ग्यान=वस्तुतः मिथ्या ज्ञान।
४. सयाने=सच्चे ज्ञानी, जिन्होंने आत्म-साक्षात्कार कर लिया है।
५. बारहवाट=भिन्न-भिन्न मतवाले।

रज्जब

सिला सँवारी राज नै, ताहि नवैं सब कोइ।
रज्जब सिष-सिल गुरु गढ़े, सोइ पूजि किन होइ ॥१॥
हाथ गढ़े को पूजता, मोल लिये का मान।
रज्जब अघड़ अमोल की, खलक खबर नहिं जान ॥२॥

---

१. राज=शिल्पकार। नवैं=मस्तक झुकाते हैं। सिष-सिल=शिष्यरूपी पत्थर। पूजि=पूज्य।
२. मान=पूज्य भाव। अघड़=जिसे मनुष्य ने नहीं बनाया। खलक=दुनिया।

मलूकदास

देवल पुजे कि देवता, की पूजे पाहाड़।
पूजन को जाँता भला, जो पीस खाय संसार ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दरिया साहब (बिहारवाले)

परश्रातम के पूजते, निर्मल नाम श्रधार।
पंडित पाथर पूजते, भटके जम के द्वार ॥१॥

पलटूदास

जल-पषान के पूजते, सरा न एकौ काम।
पलटू तन करु देहरा, मन करु सालिगराम ॥१॥
सब तीरथ में खोजिया, गहरी बुड़की मार।
पलटू जल के बीच में, किन पाया करतार ॥२॥
पलटू जहवाँ दो श्रमल, रैयत होय उजाड़।
इक घर में दस देवता, क्योंकर बसै बजार ॥३॥

---

१. पषान=पाषाण, पत्थर की मूर्ति। सरा=सफल हुश्रा। देहरा=देवालय।
२. बुड़की=डुबकी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निन्दा का अंग

कबीरदास

दोष पराये देखिकरि, चल्या हसंत हसंत।
अपनैं च्यंति न आवईं, जिनका आदि न अंत ॥१॥
निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाणी बिना, निरमल करै सुभाइ ॥२॥
कबीर घास न नींदिये, जो पाऊँ तलि होइ।
ऊड़ि पड़ै जब आँखि मैं, खरा दुहेला होइ ॥३॥
कबीर आप ठगाइये, और न ठगिये कोइ।
आप ठग्यां सुख ऊपजै, और ठग्यां दुख होइ ॥४॥
अबकै जे सांईं मिलै, तौ सब दुख आषौं रोइ।
चरनूं ऊपरि सीसि धरि, कहूँ ज कहणा होइ ॥५॥
साती सायर मैं फिरा, जंबुदीप दै पीठ।
निंद पराई ना करै, सो कोई परला दीठ ॥६॥

---

१. च्यंति न आवईं=ध्यान में नहीं आते हैं।
२. सुभाइ=सहजही।
३. न नींदिये=निंदा न करे। खरा दुहेला=बहुत ही मुश्किल, भारी तकलीफ।
५. आषौं=कहूँ।
६. जंबुदीप दै पीठ=जंबूद्वीप (अपने घर से) चलकर। परला=विरला।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दादूदयाल

दादू जिहिं घरि निंद्या साध की, सो घर गये समूल।
तिनकी नींव न पाइये, नांव न ठांव न भूल ॥१॥
दादू निंदक बपुरा जिनि मरै, परउपगारी सोइ।
हमकूं करता ऊजला, आपण मैला होइ ॥२॥

---

१. गये समूल=जड़-मूल से नष्ट हो गये।
२. बपुरा=बेचारा। ऊजला=निर्दोष, पवित्र। आपण=स्वयं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाणक का अंग

कबीरदास

स्वामी हूणां सोहरा, दोद्धा हूणां दास।
गाडर आणी ऊन कूं, बांधी चरै कपास ॥१॥
चारिउं बेद पढ़ाइकरि, हरि सूं न लाया हेत।
बालि कबीरा ले गया, पंडित ढूंढै खेत ॥२॥
बाह्मण गुरू जगत का, साधू का गुरु नाहिं।
उरझि-पुरझिकरि मरि रह्या, चारिउं बेदन माहिं ॥३॥
कासी कांठै घर करैं, पीवैं निरमल नीर।
मुकति नहीं हरि-नांव बिन, यूं कहै दास कबीर ॥४॥

---

१. हूणां=होना, वनना। सोहरा=सरल। दोद्धा=दुर्लभ, कठिन। गाडर=भेड़; अर्थात् आशा यह की थी कि स्वामीजी ज्ञानोपदेश देंगे, पर वे उलटे दूसरों को लूट रहे और मौज कर रहे हैं।
२. कांठै=किनारे, पास।

सुन्दरदास

छूटचौ चाहत जगत सौं, महाअज्ञ मतिमंद।
जोई करै उपाइ कछु, सुंदर सोई फंद ॥१॥
बैठ्यो आसन मारि करि, पकरि रह्यो मुख मौन।
सुंदर सैन बतावतें, सिद्ध भयौ कहि कौन ॥२॥

---

१. चाणक=इस शब्द का अर्थ पुरोहित श्रीहरनारायणजी ने 'कोड़े की तरह कड़ा उपदेश' यह किया है।
२. पकरि रह्यौ=ले बैठा है, साध रखा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोउ करैं पयपान कौं, कौन सिद्धि कहि बीर।
सुंदर बालक बाछरा, ये नित पीवहिं खीर ॥३॥
कोऊ होत अलौंनिया, खाय अलौंनो नाज।
सुंदर करहिं प्रपंच बहु, मान बढ़ावन काज ॥४॥

---

३. बीर=हे भाई। खीर=क्षीर, दूध।
४. अलौनिया=नमक न खानेवाला। प्रपंच=ऊपरी दिखाव, पाखंड।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दया निर्वैरता का अंग

कबीरदास

काजी मुल्लां भ्रंमयां, चल्या दुनीं कै साथि।
दिलथैं दीन बिसारिया, करद लई जब हाथि ॥१॥
खूब खांड है खीचड़ी, माँहि पड़ै टुक लूँण।
पेड़ा रोटी खाइकरि, गला कटावै कूँण ॥२॥

१. दीन=धर्म। करद=बड़ी छुरी।
२. खूब=बड़ी बढ़िया, स्वादिष्ट। टुक लूंण=ज़रा-सा नमक। कूंण=कौन।

दादूदयाल

किससौं बैरी ह्वै रह्या, दूजा कोई नाँहि।
जिसके अंग थैं ऊपजे, सोई है सब माँहि ॥१॥
काहेकौं दुख दीजिये, सांईं है सब माँहि।
दादू एकैं आत्मा, दूजा कोई नाँहि ॥२॥
काहेकौं दुख दीजिये, घटि घटि आतम राम।
दादू सब संतोखिये, यह साधू का काम ॥३॥
दादू मन्दिर काच का, मर्कट सुनहां जाइ।
दादू एक अनेक ह्वै, आप आपकौं खाइ ॥४॥

४. मर्कट=बन्दर। सुनहां=कुत्ता। आप आपकौं खाइ=अपनाही प्रतिविम्ब देख-देखकर समझते हैं कि दूसरा बंदर और दूसरा कुत्ता आ गया है और अपने आपको काट-काटकर खाते हैं। दूसरों के साथ वैर नहीं, अपनेही साथ वैर करते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दादू अरस खुदाय का, अजरावर का थान।
दादू सो क्यों ढाहिये, साहिब का नीसाण ॥५॥
दादू आप चिणावै देहुरा, तिसका करहि जतन।
प्रत्यख परमेसुर किया, सौ भानै जीव-रतन ॥६॥
मसीति संवारी माणसौं, तिसकों करै सलाम।
ऐन आप पैदा किया, सो ढाहैं मूसलमान ॥७॥
काला मुँह करि करद का, दिल कैं दूरि निवार।
सब सूरति सुबहान की, मुल्ला मुग्ध न मार ॥८॥

---

५. अरस=अर्श, उत्तम स्थान। अजरावर=अजर, जो वृद्ध नहीं होता और अमर; परमात्मा। सो क्यों ढाहिये=उसे अर्थात् जीव के शरीर का क्यों घात करे।

६. जतन=रक्षा। किया=रचा। भानै=तोड़ता है, मारता है।

८. करद=छूरी। मुग्ध=मूर्ख।

शेख फरीद

इक फिका ना गालाइ सभना मै सचा धणी।
हिआउ न कैही ठाहि माणिक सभ अमोलवै॥१॥
सभना मन माणिक ठाहणु मूलि म चांगवा।
जे तउ पिरी आसिक हिआउ न ठाहे कहीदा॥२॥

---

१. एकभी अप्रिय बात मुँह से न निकाल, क्योंकि सच्चा मालिक हर प्राणी के अंदर है।
किसीके दिल को तू मत दुखा; हर दिल एक अनमोल रतन है।

२. हर दिल एक रतन है; उसे दुखाना किसीभी तरह अच्छा नहीं अगर तू प्रीतम का आशिक है, तो किसीके भी दिल को न सता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रज्जब

मुल्ला, मन बिसमिल करौ, तजौ स्वाद का घाट।
सब सूरत सुबहान की, गाफिल गला न काट॥१॥

१. बिसमिल=घायल। घाट=दिशा, ओर।

मलूकदास

मलुका सोई पीर है, जो जानै परपीर।
जो परपीर न जानही, सो काफिर बेपीर॥१॥
हरी डारि ना तोड़िये, लागै छूरा बान।
दास मलूका यों कहै, अपना-सा जिव जान॥२॥
जे दुखिया संसार में, खोवो तिनका दुक्ख।
दलिद्दर सौंप मलूक को, लोगन दीजै सुक्ख॥३॥
कुंजर चींटीं पशू नर, तामें साहेब एक।
काटै गला खोदाय का, करै सूरमा लेख॥४॥
मक्का मदिना द्वारका, बद्री अरु केदार।
बिना दया सब झूठ है, कहै मलूक विचार॥५॥

१. पीर=फकीर, सिद्ध। परपीर=दूसरों का दुःख। काफिर=अनीश्वरवादी।
३. दलिद्दर=दारिद्रय; विपत्ति।
४. कुंजर=हाथी। खोदाय=खुदा ही।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कथनी-करणी का अंग

कबीरदास

कबीर पढ़िबा दूरि करि, पुसतक देइ बहाइ।
बाँवन आषिर सोधिकरि, ररै ममै चित लाइ॥१॥
कबीर पढ़िबा दूरि करि, आथि पढ्या संसार।
पीड़ न उपजी प्रीति सूँ, तौ क्यूँ करि करै पुकार॥२॥
कथनी मीठी खाँड सी, करनी विष की लोइ।
कथनी तजि करनी करै, विष से अंमृत होइ॥३॥
पद जोरैं साखी कहैं, साधन परि गई रौंस।
काढ़ा जल पीवैं नहीं, काढ़ि पियन की हौंस॥४॥
कहता तो बहुता मिला, गहता मिला न कोइ।
सो कहता बहि जानदे, जो नहिं गहता होइ॥५॥

१. आखिर=अक्षर। ररै ममै=रकार और मकार--'राम' यह नाम।
३. लोइ=गोली।
४. जोरैं=रचते हैं।

दादूदयाल

कहिबे सुनिबे मन खुसी, करिबा औरै खेल।
बातौं तिमर न भाजई, बिन दीवा बाती तेल॥१॥

१. बातों···तेल=विना दिये, बत्ती और तेल के कोरी बातों से अंधेरा दूर नहीं होता। तुलसीदास ने भी कहा है, 'निसि ग्रहमध्य दीप की बातन्हि तम निवृत्त नहिं होई।'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दादू बातौं ही पहुँचे नहीं, घर दूरि पयाना।
मारग पंथी उठि चलै, दादू सोइ सयाना ॥२॥
दादू निबरे नांव बिन, झूठा कथैं गियान।
बैठे सिर खाली करैं, पंडित वेद पुरान ॥३॥
मसि कागद के आसिरे, क्यों छूटै संसार।
रांम बिना छूटै नहीं, दादू भर्म बिकार ॥४॥
कागद काले करि मुये, केते वेद पुरान।
एकै आखिर पीव का, दादू पढ़ैं सुजान ॥५॥

---

२. पयाना=प्रयाण, कूच।
३. निवरे=बहुत सारे।
५. आखिर=अक्षर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समता का अंग

<u>दादूदयाल</u>

दादू दोनौं भाई हाथ पग, दोनौं भाई कान।
दोनौं भाई नैन हैं, हिन्दू मूसलमान ॥१॥
दादू करणी हिन्दू तुरक की, अपणी अपणी ठौर।
दुहुँ बिचि मारग साध का, यहु संतौं की रह और ॥२॥
दादू हिन्दू लागे देहुरा, मूसलमान मसीति।
हम लागे एक अलेख सौं, सदा निरन्तर प्रीति ॥३॥

३. देहुरा=देवालय। मसीति=मसजिद। अलेख=जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

<u>सुन्दरदास</u>

काहू सौं बांभन कहै, काहू सौं चंडाल।
सुन्दर ऐसौ भ्रम भयौं, योंही मारै गाल ॥१॥
अंत्यज ब्राह्मण आदि दै, दार मथै जो कोइ।
सुन्दर भेद कछू नहीं, प्रगट हुतासन होइ ॥२॥
दीपग जोयौ बिप्र घर, पुनि जोयौ चंडाल।
सुन्दर दोऊ सदन कौ तिमिर गयौं ततकाल ॥३॥
अंत्यज कै जलकुंभ मैं, ब्राह्मन-कलस मँझार।
सुन्दर सूर प्रकाशिया, दुहुँवनि में इकसार ॥४॥

१. वांभन=ब्राह्मण। मारै गाल=झूठमूठ गप लगाता है।
२. दार=लकड़ी। हुतासन=आग।
३. जोयो=जलाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिंदू की हदि छाड़िकै, तजी तुरक की राह।
सुन्दर सहजैं चीन्हियां एकै राम अलाह ॥५॥

रज्जब

नारायण अरु नगर कै, रज्जब पंथ अनेक।
कोई आवौ कहीं दिसि, आगे अस्थल एक ॥१॥
हिन्दू पावैगा वही, वोही मूसलमान।
रज्जब किणका रहम का, जिसकूँ दे रहमान ॥२॥
रज्जब हिन्दू तुरक तजि, सुमिरहु सिरजनहार।
पखापखी सूँ प्रीति करि कौन पहूँचा पार ॥३॥

३. पखापखी=पक्षापक्ष; भेद-वुद्धि।

पलटदास

हिन्दू पूजै देवखरा, मुसलमान महजीद।
पलटू पूजैं बोलता, जो खाय दीद बरदीद ॥१॥

१. दीदवरदीद=नज़र के सामने; प्रत्यक्ष।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेतावनी का अंग

कबीरदास

कबीर कहा गरबियौ, चाम लपेटे हड्ड।
हैवर ऊपरि छत्र सिरि, तो भी देबा खड्ड ॥१॥
आजि कि काल्हि कि पाँच दिन, जंगल होइगा बास।
ऊपरि ऊपरि फिरहिंगे, ढोर चरंदे घास ॥२॥
इहि औसरि चेत्या नहीं, पसु ज्यूँ पाली देह।
रामनाम जाण्या नहीं, अंति पड़ी मुख खेह ॥३॥
मनिषा जनम दुर्लभ है, देह न बारंबार।
तरवर थैं फल झड़ि पड़्या, बहुरि न लागै डार ॥४॥
कबीर यहु तन जात है, सकै तौ ठाहर लाइ।
कै सेवा करि साध की, कै गोविंद गुण गाइ ॥५॥
यहु तन कांचा कुंभ है, लिया फिरैं था साथि।
ढबका लागा फूटिगा, कछू न आया हाथि ॥६॥
खंभा एक गइंद दोइ, क्यूँ करि बंधसि बारि।
मानि करैं तौ पीव नहीं, पीव तौ मानि निवारि ॥७॥
ऊजल कपड़ा पहरिकरि, पान सुपारी खाहि।
एकै हरि का नांव बिन, बाँधे जमपुरि जाहि ॥८॥

---

१. हैवर=बढ़िया घोड़ा। खड्ड=कब्र से मतलब है।
३. खेह=धूल।
५. ठाहर लाइ=अच्छे ठौर पर लगादे।
६. ढबका=धक्का, ठोकर।
७. मानि=मान, अहंभाव।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं मैं मेरी जिनि करै, मेरी मूल बिनास।
मेरी पग का पैंषड़ा, मेरी गल की पास ॥९॥
कबीर नाँव जरजरी, कूड़े खेवणहार।
हलके-हलके तिरि गये, बूड़े जिनि सिर भार ॥१०॥
पानी केरा बुदबुदा, अस मानुष की जात।
देखत ही छिप जायगा, ज्यों तारा परभात ॥११॥
आछे दिन पाछे गये, गुरु से किया न हेत।
अब पछतावा क्या करै, चिड़ियाँ चुग गईं खेत ॥१२॥
माटी कहै कुम्हार को, तूँ क्या रूँदै मोंहि।
इक दिन ऐसा होयगा, मैं रूँदूँगी तोंहि ॥१३॥
आये हैं सो जायँगे, राजा रंक फकीर।
इक सिंघासन चढ़ि चले, इक बँधि जात जँजीर ॥१४॥
मैं, भँवरा तोंहि बरजिया, बन-बन बास न लेइ।
अटकैगा कहुँ बेल से, तड़पि-तड़पि जिय देइ ॥१५॥
चलती चक्की देखिके, दिया कबीरा रोय।
दुइ पट भीतर आइके, साबित गया न कोइ ॥१६॥
माली आवत देखिके कलियाँ करैं पुकार।
फूली-फूली चुनि लईं, कालिह हमारी बार ॥१७॥
कबिरा रसरी पाँव में, कह सोवै सुख चैन।
स्वाँस-नगाड़ा कूँच का बाजत है दिन-रैन ॥१८॥

---

९. मेरी मूल विनास = ममता विनाश का मूल है। पैंषड़ा = पैरों की वेड़ी। पास = फाँसी।
१०. कूड़े = अनाड़ी।
१३. रूँदै = पैरों से कुचलता है।
१५. वरजिया = मना किया। वेल = काम-वासना से तात्पर्य है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दस द्वारे का पींजरा, ता में पंछी पौन।
रहिबे को आचरज है, जाइ तो अचरज कौन ॥१९॥
फागुण आवत देखिकरि, बन रूना मन माँहिं।
ऊँची डाली पात है, दिन-दिन पोले थाँहि ॥२०॥
जो ऊग्या सो आँथिवै, फूल्या सो कुमिलाइ।
जो चिणियाँ सो ढहि पड़ै, जो आया सो जाइ ॥२१॥
पात पडंता यौं कहै, सुनि तरवर बनराइ।
अब के बिछुड़े नां मिलै, कहिं दूर पड़ैंगे जाइ ॥२२॥
मेरे वीर लुहारिया, तूं जिनि जालै मोहिं।
इक दिन ऐसा होइगा, हूँ जालौंगी तोहिं ॥२३॥
कबीर कहा गरबियौ, काल गहै कर केस।
नां जांणै कहाँ मारिसी, कै घर कै परदेस ॥२४॥
काएँ चिणांवै मालिया, लांबी भीति उसारि।
घर तौ साढ़ी तीनि हथ, घणौं तौ पौणां चारि ॥२५॥
बरियां बीती बल गया, अरु, बुरा कमाया।
हरि जिन छाड़ै हाथ थैं, दिन नेड़ा आया ॥२६॥
रोवणहारे भी मुए, मुए जलांवणहार।
हा हा करते ते मुए, कासनि करौं पुकार ॥२७॥

---

२०. रूना=उदास, दुखी। थाँहि=हो रहे हैं।
२१. जो······आँथिवै=जो उदय हुआ वह अस्त होगा। चिणिया=चिना, बनाया।
२३. वीर=भाई।
२५. मालिया=धनी। उसारि=दालान, वरामदा। घर=कब्र या श्मशान से अभिप्राय है।
२६. बरियाँ=यौवन का अवसर। बुरा कमाया=बुरे कर्म किये। नेड़ा=पास।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धनी धरमदास

लख चौरासी भर्मिके, पायो मानुष-देह।
सो मिथ्या कस खोवते, झूठी प्रीति-सनेह ॥१॥
अन्ध भयो सूझै नहीं, फूटि गई हैं चार।
झटकै पड़ै पतंग ज्यों, देखि बिरानी नार ॥२॥
लचपच दुनियां ह्वै रही, केस भये सब सेत।
बोलत बोल न आवई, लूटि लिये जम खेत ॥३॥
कोटिन जतन रह्यो नहीं, एकअंग निज मूल।
ज्यों पतंग उड़ि जायगो, ज्यों माया काफूर ॥४॥
जुद्ध रच्यो कुरुछेत्र में, बानन बरसे मेह।
तिनहीं के अभिमान तें, गिधहुँ न खायो देह ॥५॥
सौ जोजन मरजाद सिंध के, करते एकै फाल।
हाथन पर्बत तौलते, तिन धरि खायो काल ॥६॥
उपजि-उपजि बिनसत करैं, फिरि फिरि जमे-गिरास।
यही तमासा देखिके, मनुवा भयो उदास। ॥७॥
पंख लपेटे सिर धुनै, मनहीं मन पछिताय।
वह मलयागिरि छाँड़िके, इहाँ कौन बिधि आय ॥८॥

---

१. लख चौरासी=८४ लाख योनियाँ।
२. बिरानी नार=पराई स्त्री।
३. लचपच=मग्न, लीन।
४. एक अंग=एक-सा। निजमूल=अपना असली रंग। काफूर=कपूर।
५. गिधहुँ=गीधों ने भी।
६. एकै फाल=एकही फलाँग।
७. जमेगिरास=मृत्यु का ग्रास, काल के मुँह में जाना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उचकन चाहै बल करै, मनहीं मन पछिताय।
अब सो उचकि न पाइहों, धनी पहूँचो आय ।।६।।

६. उचकन चाहे=कूदना चाहता है। धनी=खेतवाला; काल से आशय है।

शेख फरीद

जितु दिहाड़ै धनवरी साहे लए लिखाइ।
मलकु जिकंनी सुणीदा मुहु देखाले आइ।।
जिदु निमाणी कढीऐ हडा कूं कड़काइ।
साहे लिखे न चलनी जिदू कूं समझाइ।।
जिदु वहूटी मरणु वरु लंजासी परणाइ।
आपण हथी जोलिकै कै गलि लगै धाइ।।
वालहु निकी पुरसलात कंनी न सुणीआइ।
फरीदा किडी पवंदई खड़ा न आपु मुहाइ ।।१।।

१. वह दिन पहले ही लिख दिया गया था, जिस दिन कि धनवंती का ब्याह होना था।

जिस दूलह के बारे में सुन रखा था, वह अपना मुखड़ा दिखाने आ पहुँचा है। हाड़ों को कड़काकर वह उस बेचारी धनवंती को खींचकर अपने साथ ले जायेगा।

अपनी जीवात्मा को तू समझादे, कि जो घड़ी नियत हो चुकी उसे बदला नहीं जा सकता।

जीवात्मा दुलहिन है, और मृत्यु है दूलह; वह उसे ब्याहकर अपने साथ ले जायेगा।

विदा होते समय, वह बेचारी किसके गले में अपनी बाहें डालेगी?

क्या तुमने सुना नहीं कि वह दुलहिन बाल से भी कहीं अधिक महीन है?

फरीद, जब तेरा बुलावा आये, उठकर खड़ा हो जाना और अपने आपको धोखा न देना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फरीदा जां तउ घटण वेल तां तू रता दुनी सिउ।
मरग सवाई नीहि जां भरिआ तां लदिआ ॥२॥
देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर।
अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूर ॥३॥
फरीदा जिन्ह लोइण जगु मोहिआ से लोइग मै डिठु।
काजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइ बहिठु ॥४॥
फरीदा मैं भोलावा पगड़ी मत मैली होइ जाइ।
गहिला रूहु न जाणई सिरु भी मिटी खाइ ॥५॥

---

२. फरीद, जब तेरे कमाने के दिन थे, तब तो तू दुनिया के रंग में रँगा हुआ था।
मौत की नींव मज़बूत है; खेप के भरतेही वह लादनहार लेकर चल देगा।
(मतलब यह कि आखिरी साँस पूरी हुई कि मौत उसी पल जीव को खींचकर ले जायेगी।

३. फरीद, देख तो ज़रा, यह क्या हुआ—तेरी दाढ़ी सफेद हो गई;
आगा तेरा नज़दीक है, और पीछा दूर छूट गया।

४. फरीद, मैंने उन नयनों को देखा है, जिन्होंने दुनिया को मोह लिया था—
और जो काजल की रेख भी सहन नहीं करते थे; अब चिड़ियाँ उनमें अपने अंडे रख रही हैं।

५. फरीद, मैं डरता हूँ कि कहीं मेरी पगड़ी मिट्टी से मैली न हो जाये;
मेरा बावला जी यह नहीं जानता कि पगड़ी तो क्या मेरे इस सिर को भी यह मिट्टी सड़ा-गलाकर खा जायेगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फरीदा इनी निकी जंघीऐ थल डूगर भविश्रोम्हि।
अजु फरीदै कूजड़ा सै कोहां थीश्रोमि ॥६॥

फरीदा ए विसु गंदला धरीश्रां खंडु लिवाड़ि।
इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाड़ि ॥७॥

चलि चलि गईश्रां पंखिश्रा जिनो बसाये तल।
फरीदा सरु भरिश्रा भी चलसी थके कवल इकल ॥८॥

फरीदा ँट सिराणे भुइ सवणु कीड़ा लड़िश्रो मासि।
केतड़िया जुग वापरे इकतु पइश्रा पासि ॥९॥

फरीदा किथै तैडे मा पिश्रा जिन्ही तू जणिश्रोहि।
तै पासहु श्रोइ लदि गए तू अजै न पतीणोहि ॥१०॥

---

६. फरीद, इन पतली जाँघों व पिंडलियों से कितने ही मैदानों और पहाड़ों को मैंने तय किया।

पर, आज फरीद के लिए अपना कूजा उठाना भी मानों सैकड़ों कोसों की मंजिल तय करना हो गया।

७. फरीद, ये (संसारी) सुख खांड से चुपड़े विष के अँकुरे हैं;
कुछ तो उनको रोपते हुए ही चल वसे; और कुछ उजड़ गये उन्हें चुनते हुए।

८. वे सव पक्षी, जिनसे कि तालाव आवाद था, उड़ गये;
फरीद, यह भरा तालाब भी रहने का नहीं, अकेले कमल ही रहेंगे।

(पक्षी = राजे-महाराजे और उच्च पदाधिकारी। तालाब = संसार। कमल = संतजन।)

९. फरीद, ईंटें तो होंगी तेरा तकिया, और तू सोयेगा ज़मीन के नीचे; कीड़े तेरे मांस को खायेंगे;
एकही करवट पड़े-पड़े कितने जुग वीत जायेंगे तेरे!

१०. फरीद, कहाँ हैं तेरे माँ-वाप, जिन्होंने कि तुझे जनम दिया था?
तेरे पास से वे चले गये; आजभी तुझे विश्वास नहीं होता कि दुनिया यह नापायदार है?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुढा होआ सेख फरीदु कंबणि लगी देह।
जे सउ वर्हिणा जीवणा भी तनु होसी खेह ॥११॥
पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड।
जाइ सुते जीराण महि थीए अतीमा गड ॥१२॥
फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गए।
कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ॥१३॥
फरीदा खिथड़ि मेखा अंगलीआ जिंदु न काई मेख।
वारी आपो आपणी चले मसाइक सेख ॥१४॥

---

११. शेख फरीद अब बुड्ढा हो गया, और देह उसकी लड़खड़ाने लगी है। वह यदि सौ बरस भी जीये, तोभी उसकी देह को आखिर खाक में ही मिलना है।

१२. जिनके साथ नगाड़े और तुरही बजते थे, जिनके सिर पर राज-छत्र रहते थे, और जिनकी विरुदावली चारण गाते थे——
वे कब्रस्तान में सोने के लिए चले गये, और वहाँ गरीब यतीमों की तरह दफना दिये गये।

१३. फरीद, जिन्होंने मकान, हवेलियाँ और ऊँचे-ऊँचे महल बनवाये थे, वे भी चले गये;
वे झूठा सौदा करके गये, और कब्र में डाल दिये गये।

१४. फरीद, अंगरखे में, टिकाऊ बनाने के लिए, बहुत सारे टाँके लगा दिये हैं, पर ज़िंदगी में ऐसा कोई टाँका नहीं लगा हुआ है।

गुरु तेगबहादुर

गुन गोबिंद गाइओ नहीं, जनमु अकारथ कीन।
कहु नानक हरि भजु मना, जिहि बिधि जल कौ मीन ॥१॥
बिखिअन सिउ काहे रचिओ, निमिख न होहि उदास।
कहु नानक भजु हरि मना, परै न जम की फाँस ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिहि सिमरत गति पाइए, तिहि भजु रे तैं मीत।
कहु नानक सुन रे मना, अउधि घटति है नीत ॥३॥
राम गइओ रावनु गइओ, जाको बहु परिवार।
कहु नानक थिरु कछु नहीं, सुपने जिउ संसार ॥४॥
चिंता ताकी कीजिए, जो अनहोनी होइ।
इह मारगु संसार को, नानक थिरु नहिं कोइ ॥५॥
जो उपजिओ सो बिनसिहै, परो आजु कै काल।
नानक हरिगुन गाइले, छाड़ि सगल जंजाल ॥६॥

दादूदयाल

दादू यहु घट काचा जल भरचा, बिनसत नाहीं बार।
यहु घट फूटा जल गया, समझत नहीं गंवार ॥१॥
सब जग सूता नींदभरि, जागै नाहीं कोइ।
आगैं पीछैं देखिये, परतखि परलै होइ ॥२॥
दादू प्राण पयाण करि गया, माटी धरी मसांणा।
जालणहारे देखिकरि, चेतैं नहीं अजाणा ॥३॥
बाहरि गढ़ निरभै करैं, जीबे के ताईं।
दादू मांहैं काल है, सो जाणै नाहीं ॥४॥
दादू विष अंमृत घट में बसैं, दून्यूँ एकै ठाँव।
माया बिषै बिकार सब, अंमृत हरि का नाँव ॥५॥
आपै मारैं आपकौं, आप आपकौं खाइ।
आपै अपना काल है, दादू कहि समझाइ ॥६॥

---

२. परतखि=प्रत्यक्ष। परलै=प्रलय, मृत्यु।
३. मसांणा=श्मशान, मरघट। माटी=मृत शरीर। अजाणा=मूर्ख।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुन्दरदास

मेरी मेरी करत हैं, देखहु नर की भोल।
फिरि पीछे पछिताहुगे (सु) हरि बोलौ हरि बोल ॥१॥
चहलपहल-सी देखिकैं, मान्यौ बहुत अन्दोल।
काल अचानक लै गयौं (सु) हरि बोलौ हरि बोल ॥२॥
सुकृत कोऊ ना कियौ, राच्यौ झँझट झोल।
अन्ति चल्यौ सब छाड़िकैं (सु) हरि बोलौ हरि बोल ॥३॥
मूंछ मरोरत डोलई, ऐंठ्यौं फिरत ठठोल।
ढेरी ह्वैहै राख की, (सु) हरि बोलौ हरि बोल ॥४॥
माल मुलक हय गय घने, कामिनि करत कलोल।
कतहूँ गये बिलाइकैं (सु) हरि बोलौ हरि बोल ॥५॥
मोटे मीर कहावते, करते बहुत डफोल।
मरद गरद में मिलि गये (सु) हरि बोलौ हरि बोल ॥६॥
ऐसी गति संसार की, अजहूँ राखत जोल।
आपु मुये ही जानिहै, (सु) हरि बोलौ हरि बोल ॥७॥
बांकि बुराई छाड़ि सब, गांठि हृदै की खोल।
बेगि बिलंब क्यों बनत है, (सु) हरि बोलौ हरि बोल ॥८॥
हिरदै भीतर पैठिकरि, अन्तःकरण बिरोल।
को तेरौ तू कौन कौ, (सु) हरि बोलौ हरि बोल ॥९॥

२. अंदोल=आनन्द-कलोल, मौज।
३. राच्यौ=रंग गया। झोल=टंटा।
४. ठठोल=हँसी-मज़ाक।
५. गय=गज।
६. मोटे मीर=वड़े रईस। डफोल=डींग, आडम्बर। गरद=धूल।
७. जोल=('सुंदर-ग्रंथावली' के अनुसार) ज़ोर, शक्ति का घमंड।
८. वांकि=वाँकापन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुन्दर मनुषा देह यह, पायौ रतन अमोल।
कौड़ी सटै न खोइये, मालि हमारौ बोल ॥१०॥
सुन्दर सांचो कहत है, मति आनै कछु रोस।
जौ तैं खोयो रतन यह, तौ तोहीकौं दोस ॥११॥
बार बार नहिं पाइये, सुन्दर मनुषा देह।
रामभजन, सेवा, सुकृत, यह सोदो करि लेह ॥१२॥
सुन्दर सांचो कहत है, जौ मानै तौ मानि।
यहै देह अति निंद्य है, यहै रतन की खानि ॥१३॥
सुन्दर नदी-प्रवाह में, मिल्यौ काठ-संजोग।
आपु आपुकौं ह्वै गये, त्यौं कुटंब सब लोग ॥१४॥
सुन्दर बैठे नाव में, कहूँ कहूँ तें आइ।
पार भये कतहूँ गये, त्यौं कुटंब सब जाइ ॥१५॥
सुन्दर पक्षी वृक्ष पर, लियौ बसेरा आनि।
राति रहे दिन उठि गये, त्यौं कुटंब सब जानि ॥१६॥
सुन्दर यह औसर भलौ, भजिलै सिरजनहार।
जैसे ताते लोह कौं लेत मिलाइ लुहार ॥१७॥
सुंदर पंजर हाड़ कौ, चाम लपेट्यौ ताहि।
तामें बैठ्यौ फूलिकै, मो समान को आहि ॥१८॥
सुंदर अपरस धोवती, चौकै बैठौ आइ।
देह मलीन सदा रहै, ताही कै संगि खाइ ॥१९॥

१०. सटै=मोल पर।
११. रोस=रोष, क्रोध=नाराज़ी।
१७. लेत मिलाइ=जोड़ लेता है।
१८. फूलिकै=मौज में।
१९. अपरस धोवती=रेशम की धोती, जिसे वैष्णव पहनकर भोजन करते और अपनेको पवित्र मानते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुंदर देखै आरसी, टेढ़ी नाखै पाग।
बैठ्यो आइ करंक पर, अतिगति फूल्यौ काग ॥२०॥

२०. नाखै=अर्थ होता है 'डालता है', पर यहाँ अर्थ है 'बाँधता है'। करंक=लाश। अतिगति=अत्यन्त। फूल्यौ=आनंदित है।

मलूकदास

सुन्दर देही देखिके, उपजत है अनुराग।
मढ़ी न होती चाम की, तो जीवत खाते काग ॥१॥
जेते सुख संसार के, इकठे किये बटोर।
कन थोरे काँकर घने, देखा फटक पछोर ॥२॥
मलूक कोटा झाँझरा, भीत परी भहराय।
ऐसा कोई ना मिला, जो फेर उठावै आय ॥३॥

२. कन=अन्न के दाने। काँकर=कंकड़। पछोर=सूप में रखकर अनाज साफ करना।
३. झाँझरा=जर्जरित, बहुत पुराना। परी भहराय=ढह पड़ी; देहपात से अभिप्राय है।

जगजीवन साहब

भूलु फूलु सुख पर नहीं, अबहूँ होहु सचेत।
साँईं पठवा तोहि काँ, लावो तेहि ते हेत ॥१॥
तजु आसा सब झूठ ही, सँग साथी नहिं कोय।
केउ केहू न उबारिही, जेहि पर होय सो होय ॥२॥

१. पठवा=भेजा, जन्म दिया। हेत=प्रेम।
२. केउ केहू न उबारही=कोई किसीको नहीं उबारता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहँवाँ तें चलि आयहू, कहाँ रहा अस्थान।
सो सुधि बिसरि गई तोहिं, अब कस भयसि हेवान ।।३।।
काया-नगर सोहावना, सुख तबहीं पै होय।
रमत रहै तेहि भीतरे, दुख नहिं ब्यापै कोय ।।४।।
मृत-मंडल कोउ थिर नहीं, आवा सो चलि जाय।
गाफिल ह्वै फन्दा परचौ, जहँ-तहँ गयो बिलाय ।।५।।

५. मृत-मंडल=मर्त्यलोक।

सहजोबाई

दरद बटाय सकैं नहीं, मुए न चालैं साथ।
सहजो क्योंकर आपने सब नाते बरबाद ।।१।।
सहजो जीवत सब सगे, मुए निकट नहिं जायँ।
रोवैं स्वारथ आपने, सुपने देख डरायँ ।।२।।
सहजो नौबत स्वास की, बाजत है दिन-रैन!
मूरख सोवत है महा, चेतन कू नहिं चैन ।।३।।
बैठि बैठि बहुतक गये, जग तरवर की छांहि।
सहजो बटाऊ बाट के, मिलि-मिलि बिछुड़त जाहिं ।।४।।
झुरि-झुरिके पिंजर भये, रोय गँवाये नैन।
मरे गये सो ना मिले, सहजो सुनै न बैन ।।५।।
जो रोये सूँ बाहुरै, तौ रोवौ दिन-रात।
तन छीजै वह ना मिले, सहजो कूड़ी बात ।।६।।
देह निकट तेरे पड़ी, जीव अमर है नित्त।
दुइ में मूवा कौन-सा, का सूँ तेरा हित्त ।।७।।
सहजो सुपने एक पल, बीतैं बरस पचास।
आँख खुलै जब झूठ है, ऐसे ही घट-बास ।।८।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जगत तरैयाँ भोर की सहजो ठहरत नाहिं।
जैसे मोती ओस की, पानी अँजुली माहिं ॥९॥
धूवाँ को सो गढ़ बन्यो, मन में राज संजोय।
झांई माई सहजिया, कबहूँ साँच न होय ॥१०॥

दयाबाई

दयाकुँवर या जक्त[1] में, नहीं रह्यो थिर कोय।
जैसो बास सराय को, तैसो यह जग होय ॥१॥
जैसो मोती[2] ओस को, तैसो यह संसार।
बिनसि जाय छिन एक में, दया प्रभू उर धार ॥२॥
तात मात तुम्हरे गये, तुम भी भये तयार।
आज काल्ह में तुम चलौ, दया होहु हुसियार ॥३॥
बड़ो पेट है काल को, नेक[4] न कहूँ अघाय।
राजा राना छत्र-पति, सबकूँ लीले जाय ॥४॥
बिनसत बादर बात बसि,[5] नभ में नाना भाँति।
इमि नर दीसत कालबस, तऊ न उपजै साँति ॥५॥

---

१. जक्त=जगत्।
२. मोती=बूंद से आशय है।
४. नेक=ज़रा भी। अघाय=तृप्त होता है।
५. वात वसि=हवा से। दीसत=दीखते हैं। साँति=शान्ति।

पलटूदास

जो दिन गया सो जान दे, मूरख अबहूँ चेत।
कहता पलटूदास है, करिले हरि से हेत ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पलटू नर-तन जातु है, सुन्दर सुभग सरीर।
सेवा कीजै साध की, भजि लीजै रघुबीर ॥२॥
पलटू ऐसी प्रीति करु, ज्यों मजीठ को रंग।
टूक-टूक कपड़ा उड़ै, रंग न छोड़ै संग ॥३॥

---

३. मजीठ=पक्का लाल रंग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विविध उपदेश का अंग

कबीरदास

जो तोकों कांटा बुवै ताहि बोव तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, वाको है तिरसूल ॥१॥
दुरबल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।
बिना जीव की स्वाँस से लोह भसम ह्वै जाय ॥२॥
या दुनिया में आइके छांड़ि देइ तू ऐंठ।
लेना होइ सो लेइ ले, उठी जात हैं पैंठ ॥३॥
आवत गारी एक है, उलटत होय अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक ॥४॥
उदर समाता अन्न लै, तनहि समाता चीर।
अधिकहि संग्रह ना करै, ताका नाम फकीर ॥५॥
पढ़ि-पढ़िके पत्थर भये, लिखि-लिखि भये जो ईंट।
कबिरा अंतर प्रेम की लागी नेक न छींट ॥६॥
देहधरे का दंड है, सब काहू को होय।
ग्यानी भुगतै ग्यान करि, मूरख भुगतै रोय ॥७॥
जूआ, चोरी, मुखबिरी, ब्याज, घूस, परनारि।
जो चाहै दीदार को, एती बस्तु निवारि ॥८॥

---

३. ऐंठ=अभिमान। पैंठ=हाट।
५. चीर=कपड़ा। समाता=आवश्यकताभर।
८. मुखबिरी=भेद की खबर देने का काम, जासूसी। दीदार=ईश्वर का दर्शन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राज-दुवारे साधुजन तीनि वस्तु कों जाय।
कै मीठा, कै मान कों, कै माया की चाय ॥९॥
नाचैं गावै पद कहै, नाहीं गुरु सों हेत।
कह कबीर क्यों नीपजैं बीज-बिहूनो खेत ॥१०॥
करु बहियाँ बल आपनी, छाँड़ बिरानी आस।
जाके आँगन नदी है, सो कस मरै पिआस ॥११॥
एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
जो तूँ सेवै मूल कों, फूलै फलै अघाय ॥१२॥
सब काहू का लीजिये साँचा सब्द निहार।
पच्छपात ना कीजिए, कहै कबीर बिचार ॥१३॥
रचनहार को चीन्हिले, खाने कों क्यों रोय।
दिल-मंदिर में पैंठकरि तानि पिछौरा सोय ॥१४॥
हीरा तहाँ न खोलिए, जहँ खोटी है हाटि।
कसकरि बाँधो गाठरी, उठकरि चालो बाट ॥१५॥
हंसा बगुला एक-सा मानसरोवर माँहि।
बगा ढंढोरैं माछरी, हंसा मोती खाँहि ॥१६॥
ग्यान-रतन की कोठरी, चुप करि दीन्हों ताल।
पारखि आगे खोलिए, कुंजी बचन रसाल ॥१७॥
सहज तराजू आनिकरि, सब रस देखा तोल।
सब रस माहीं जीभ-रस, जो कोइ जानै बोल ॥१८॥

९. चाय=चाह।
१०. नीपजै=उपजाता है।
१४. तानि पिछौरा सोय=चादर फैलाकर सोजा, निश्चिन्त होजा।
१५. खोटी हाटि=झूठी दूकानदारी।
१६. ढंढोरैं=ढूंढ़ता है।
१७. ताल=ताला।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीतल सब्द उचारिये, अहं आनिए नाहिं।
तेरा प्रीतम तुज्झ में, सत्रू भी तुझ माहिं ॥१६॥
सब्द बराबर धन नहीं, जो कोइ जानै बोल।
हीरा तो दामों मिलै, सब्दहिं मोल न बोल ॥२०॥
न्हाए धोए क्या भया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहै, धोए बास न जाय ॥२१॥
ऊँचे गाँव पहाड़ पर, औ मोटे की बांह।
ऐसो ठाकुर सेइए, उबरिय जाकी छांह ॥२२॥
जाको राखै साँइयाँ, मारि न सक्कै कोय।
बाल न बांका करि सकै, जो जग बैरी होय ॥२३॥
तोहिं पीर जो प्रेम की, पाका सेती खेल।
काँची सरसों पेरिकै खली भया ना तेल ॥२४॥
कबिरा संगत साधु की, जौ की भूसी खाइ।
खीर खांड भोजन मिलै, साकट संग न जाइ ॥२५॥
कबिरा खाई कोट की, पानी पिवै न कोइ।
जाइ मिलै जब गंग से, सब गंगोदक होइ ॥२६॥
कबिरा सरीर सराय है, भाड़ा देके बस।
जब भटियारी खुस रहै, तब जीवन का रस ॥२७॥
कबिरा छुधा है कूकरी, करति भजन में भंग।
इसको टुकड़ा डारिके, सुमिरन करो निसंक ॥२८॥

---

१६. अहं=अहंकार।
२२. मोटे की वांह=बड़े की शरण। ठाकुर=स्वामी।
२४. पाका सेती=सच्चे के साथ।
२५. साकट=शाक्त; ईश्वर-विमुख से आशय है।
२७. रस=आनन्द, सार्थकता।
२८. छुधा=क्षुधा, भूख। कूकरी=कुतिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नींद निसानी मीच की, उट्ठ कबीरा जाग।
और रसायण त्याग के नाम रसायण पाग॥२९॥
चलना है, रहना नहीं, चलना बिसवें बीस।
कबिरा ऐसे सुहाग पर कौन बँधावै सीस॥३०॥
अपने-अपने चोर को सब कोइ डारै मारि।
मेरा चोर जो मोहिं मिलै, सर्बस डारूँ वारि॥३१॥
कहे सुने की है नहीं, देखा देखी बात।
दूलह दुलहिन मिल गये सूनी पड़ी बरात॥३२॥
नैनन की कोठरी पुतरी पलंग बिछाय।
पलकों की चिक डारिके पीतम लेहु रिझाय॥३३॥

---

२९. निसानी=संकेत। मीच=मौत। पाग=मगन होजा, प्रीति करले।
३०. बिसवें बीस=निश्चित रूप से। ऐसे……सीस=ऐसे नाशवान विषयों के सुख की खातिर कौन मूर्ख आफत मोल ले।
३२. दूलह दुलहिन=परमात्मा और जीवात्मा से आशय है।
३३. पुतरी=पुतली। चिक=परदा।

गुरु नानकदेव

धृगु तिन्हा का जीविआ जि लिखि-लिखि बेचहिं नाउ।
खेती जिनकी उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ॥
सचै सरमै बाहरे अगै लहहि न दादि।
अकलि एह न आखीऐ अकलि गवाईऐ वादि॥
अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाईऐ मान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकली पढ़िकै बूझिऐ अकली कीजै दानु।
नानक आखै राहु एहु होरि गलां सैतानु ॥१॥

१. धिक्कार है उनके जीने को, जो प्रभु का नाम लिख-लिखकर बेचते हैं।

जिनकी खेती उजड़ चुकी उनका क्या काम खलिहान में ?

जिनके अंतर में सत्य और शील नहीं रहा, उनकी आगे सुनवाई नहीं होगी।

उसे अक्ल न कहो, जो कि वाद-विवाद में खर्च होती हो।

अक्ल से तो प्रभु की सेवा की जाती है; अक्ल से सम्मान मिलता है।

अक्ल से ही पढ़कर समझा जाता है, और उसीके द्वारा सही रीति से दान दिया जाता है।

नानक कहता है—यही अक्ल के रास्ते हैं, और सब रास्ते शैतान के हैं।

गुरु अंगद

हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि।
हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥
हउमै कित्थुहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ।
हउमै एहो हुकमु है पाइऐ किरति फिराहि ॥
हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किरपा करे जि आपणी ता गुरु का सबदु कमाहि ॥
नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥१॥
सलामु जवाबु दोवै करे मुढहु घुत्था जाइ ।
नानक दोवै कूडीआ थाइ न काई पाइ ॥२॥
चाकरु लगौ चाकरी नाले गरबु वादु ।
मल्ला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥

---

१. अहंकार स्वभावतः अहंकार के ही कर्म कराता है।

अहंकार वह (भव)-बन्धन है, जिससे बार-बार जन्म लेना पड़ता है।

अहंकार यह उत्पन्न कहाँ से होता है, इसका मूल क्या है, और किस साधन से यह नष्ट हो सकता है?

अहंकार यह आदेश है कि मनुष्य अपने कृत कर्मों के अनुसार (संसार-चक्र पर) घूमता ही रहे।

अहंकार जीर्ण रोग अवश्य है, पर उसकी एक औषधि भी है, और वह हमारे अंदर ही है।

यदि परमात्मा अपनी कृपा करदे, तो गुरु का उपदेश सुलभ हो सकता है।

नानक कहता है कि हे मनुष्यो ! इसी एक साधन से दुःख का निवारण हो सकेगा।

२. जो मनुष्य मालिक की वंदना करता है और साथ-ही-साथ उसे जवाब भी देता है, या उसके कामों में दोष निकालता है, उसने शुरू से ही गलती की हैं।

उसकी वंदना और उसकी आलोचना दोनों ही अर्थहीन हैं; उसे, नानक, मालिक के दरबार में जगह मिलने की नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु।
नानक जिसनो लग्गा तिसु मिलै लग्गा सो परवानु ॥३॥
जो जीइ होइ सु उग्गवै मुह का कहिआ वाउ।
बीजै बिखु मंगै अंमृतु देखहु एहु निआउ ॥४॥
नानक दुनिआ कीआं वडिआइआं अगी सेती जालि ॥
एन्ही जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥५॥

३. नौकर नौकरी करते हुए जब गरूर करता है, और झगड़ा भी और बहुत बकझक भी करता है, तो इससे वह अपने मालिक को खुश नहीं करता।

अपने आपको खोकर यदि वह सेवा करे, तो उसे कुछ आदर मिलेगा।

नानक, मालिक को वहा पा सकेगा, जिसके मनमें उससे मिलने की अभिलाषा होगी; और उसकी अभिलाषा अवश्य पूरी होगी।

४. जो मनमें होता है वही मुँह से निकलता है।

विष बोता है, और अमृत पाने की आशा करता है, देखो तो इस न्याय को!

५. नानक, दुनिया की बड़ाइयों में लगादे आग;

इन्हीं आग-लगी बड़ाइयों ने ता उसका नाम विसार दिया है; इनमें से एक भी साथ जाने की नहीं।

शेख फरीद

किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि।
साईं मेरैं चंगा कीता नाही त हंभी दझां आहि ॥१॥

१. मैं न कुछ जानता हूँ, न कुछ देखता हूँ—दुनिया यह गोया धधकती हुई आग है;

मेरे साईं ने अच्छा किया कि मुझे चेता दिया, नहीं तो मैं भी इसमें जलबल गया होता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फरीदा जे तू अकलि लतीफ काले लिखु न लेखु।
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नीवां करिं देखु ॥२॥
फरीदा जो तैं मारनि मुकीग्रां तिन्हा न मारे घुंमि।
आपनड़े घरि जाईए पैर 'तिन्हादे चुंमि ॥३॥
फरीदा जा लबु त नेहु किआ सबु त कूड़ा नेहु।
किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥४॥
फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि।
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥५॥
फरीदा कंनि मुसला सूफूगलि दिलि काती गुड़्ड बाति।
बाहरि दिसै चानणा दिलि अंधिआरी राति ॥६॥

---

२. फरीद, अगर तू तेज़ अक्ल रखता है, (तो दूसरों के खिलाफ) काले अंक मत लिख।

अपना सिर झुकाकर तू तो अपने ही गरीवां की तरफ देख।

(मतलब यह कि दूसरों के दोष मत देख; तू तो अपने दिल को देख कि उसमें कितने क्या दोष भरे पड़े हैं।)

३. फरीद, अगर लोग तुझे मुक्कों से मारें, तो बदले में तू उन्हें मत मार; तू तो उनके कदमों को चूमकर अपने घर चलाजा।

४. फरीद, जहाँ लोभ है, वहाँ प्रेम कहाँ से होगा? लोभ होगा तो प्रेम वहाँ झूठा होगा।

टूटे छप्पर के नीचे मेह में तू आखिर कितने दिन गुजारेगा?

५. फरीद, शाखों और काँटों को तोड़ता हुआ एक जंगल से दूसरे जंगल में तू क्यों भटकता फिरता है?

रब तो तेरे हिये में वस रहा है; फिर जंगल में उसे तू क्यों ढूंढ़ रहा है?

६. फरीद, वे कंधे पर मुसल्ला रखते हैं, सूफी की कफनी पहनते हैं, और मीठी-मीठी बात करते हैं, पर दिलों में वे छुरी रखते हैं;

बाहर तो वे चाँदनी फैलाते रहते हैं, मगर दिलों में उनके काली अँधेरी रात झुक रही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फरीद मै जानिआ दुखु मुझकू दुख सबाइऐ जगि।
ऊचे चड़िकै देखिआ तां घरि घरि एहा अगि ॥७॥
कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु।
कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु ॥८॥
निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहवा मणीआ मंतु।
एत्रै भैणे वैस करि ता वसि आवी कंतु ॥९॥

---

७. फरीद, मैं समझता था कि दुख मुझे ही है, मगर दुख तो सारी ही दुनिया को है;
जब ऊँचे चढ़कर देखा, तब मैंने पाया कि यह आग तो हर घर में लग रही है।

८. वह कौन-सा शब्द है, वह कौन-सा गुण है, वह कौन-सा अनमोल मन्त्र है; मैं कौन-सा भेष धारूँ, जिससे कि मैं अपने स्वामी को वस में करलूँ?

९. दीनता वह शब्द है; धीरज वह गुण है, शील वह अनमोल मन्त्र है;
तू इसी भेष को धारण कर, बहिन, तेरा स्वामी तेरे बस में हो जायेगा।

मलूकदास

राम राम के नाम को, जहाँ नहीं लवलेस।
पानी तहाँ न पीजिये, परिहरिये सो देस ॥१॥
भेष फकीरी जे करैं, मन नहिं आवै हाथ।
दिल फकीर जे हो रहे, साहेब तिनके साथ ॥२॥
सब कोउ साहेब बन्दते, हिन्दू मूसलमान।
साहेब तिसको बन्दता, जिसका ठौर इमान ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दया-धर्म हिरदे बसै, बोलै अमिरत बैन।
तेई ऊँचे जानिये, जिनके नीचे नैन ॥४॥
प्रेम नेम जिन ना कियो, जीता नाहीं मैन।
अलख पुरुष जिन ना लख्यो, छार परो तेहि नैन ॥५॥
सब बाजे हिरदे बजैं, प्रेम पखावज तार।
मंदिर ढूँढ़त को फिरै, मिल्यो बजावनहार ॥६॥
करै पखावज प्रेम का, हृदय बजावै तार।
मनै नचावै मगन ह्वै, तिसका मता अपार ॥७॥
आदर मान महत्व सत, बालापन को नेह।
यह चारों तबहीं गये, जबहिं कहा 'कछु देह' ॥८॥

---

५. मैन=कामवासना। छार=धूल।
७. मता=सिद्धान्त।

दादूदयाल

दादू सेवग सांईं बस किया, सौंप्या सब परिवार।
तब साहिब सेवा करै, सेवग के दरबार ॥१॥
दादू पाती प्रेम की, बिरला बाँचै कोइ।
वेद पुरान पुस्तक पढ़ै, प्रेम बिना क्या होइ ॥२॥
सुत बित मांगैं बावरे, साहिब सी निधि मेलि।
दादू वै निर्फल गये, जैसे नागरबेलि ॥३॥

---

१. सेवग=सेवक।
३. बित=वित्त, धन। मेलि=फेंककर। नागर बेलि=एक लता जिसमें फूल नहीं आते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दादू पंचौं ये परमोधिले, इनहीं कौं उपदेस।
यहु मन अपणा हाथि करि, तौ चेला सब देस ॥४॥
दादू इस संसार में, ये द्वै रतन अमोल।
इक सांईं अरु संतजन, इनका मोल न तोल ॥५॥
सुरग नरक संसै नहीं, जीवन मरण भै नांहि।
रामविमुख जे दिन गये, सो सालें मन मांहि ॥६॥
साहिब मारे ते मुये, कोई जीवै नांहि।
साहिब राखे ते रहे, दादू निजघर मांहि ॥७॥
दिन दिन लहुड़े हूंहि सब, कहुं मोटा होता जाइ।
दादू दिन तेही बढ़े, जे रहे रांम ल्यौ लाइ ॥८॥
दादू सब जग नीधना, धनवंता नंहि कोइ।
सो धनवंता जाणिये, जाकै रामपदारथ होइ ॥९॥
दादू केते कहि गये, अन्त न आवै ओर।
हमहूँ कहते जात हैं, केते कहसी होर ॥१०॥
मिलै तो सब सुख पाइये, बिछुरे बहु दुख होइ।
दादू सुख दुख राम का, दूजा नाहीं कोइ ॥११॥

---

४. पंचौं=पांचों इन्द्रियों को। परमोधिले=प्रवोध ले अर्थात् ज्ञान दे दे।
६. भै=भय।
८. लहुड़े=लघु, छोटे, अल्पायु। दिन तेही बढ़े=आयु के दिन उन्हींके बढ़े अर्थात् सफल हुए।
९. नीधना=निर्धन।
१०. कहसी=कहेंगे। होर=और (पंजावी प्रयोग)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रज्जब

समये मीठा बोलना, समये मीठा चूप।
उनहाले छाया भली, रज्जब सियाले धूप ॥१॥
ऊपर संत असंत सम, अंतर अंतर होय।
रज्जब पानी ईख का, रूप एक रस दोय ॥२॥
रज्जब बेटी बंदगी, जाई सिरजनहार।
दीन्हीं सो जा जीव कूँ, रिधि सिधि बाँधी लार ॥३॥
नामरदाँ भुगती नहीं, मरद गये करि त्याग।
रज्जब रिधि क्वाँरी रही, पुरुष-पाणि नहिं लाग ॥४॥
जैसे छाया कूप की, बाहरि निकसै नाँहिं।
जन रज्जब यूँ राखिये, मन मनसा हरि माँहिं ॥५॥
साध, सबूरी स्वान की, लीजै करि सुविवेक।
वै घर बैठ्या एक कै, तू घर घर फिरहि अनेक ॥६॥
करणी कठिन रे बंदगी, कहनी सब आसान।
जन रज्जब रहणी बिना, कहाँ मिलै रहिमान ॥७॥

१. उनहाले=गर्मी में। सियाले=जाड़ों में।
३. बंदगी=भक्ति। जाई=पैदा की गई। लार=साथ।
४. रिधि=ऋद्धि, संपदा। क्वाँरी=कुमारी, अविवाहिता,। पाणि=हाथ।
५. मन मनसा=मन की वृत्ति।
६. सबूरी=संतोष।

बषना

जे बोल्या तौ राम कहि, जे चुपका तौ राम।
मन मनसा हिरदा महीं, बषना यहु विश्राम ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब आया उस एक मैं, दही मही घृत सूध।
बषना बाकें क्या रह्या, जब दुहि पीयां दूध ॥२॥
मोटी देखि बहुत मन मान्यां, दूहतां दूध न आवै।
बषना बहिल भैंसिनैं मूरखि, क्याहनैं पसर चरावै ॥३॥
कण कड़वी भेला चरैं, आंधा बिषई प्राण।
बषना पसु भरम्यां भखै, सुनि भागौत पुराण ॥४॥
पछि पांणी राखै नहीं, जौ भावै सो खाइ।
तौ ओषदि गुण नां करै, बषना व्याधि न जाइ ॥५॥
ईंहि ओषद तैं साध सब, अनत उधारी देह।
कोइ कुपछ का फेर है, नहीं त ओषद येह ॥६॥
सत जत साँच खिमा दया, भाव भगति पछि लेह।
तौ अमर ओषदी गुण करै, बषना उधरै देह ॥७॥
बषना हरि जल बरषिया, जल थल भरे अनेक।
करम कठौंरा माणसां, रोम न भीगै एक ॥८॥

---

२. मही=मट्ठा। सूध=शुद्ध।
३. बहिल=बाँझ। क्याहनैं=क्यों, व्यर्थ। पसर=रात को हरी घास जंगल में चराना।
४. कण=अन्न। कड़वी=भूसा। आँधा=मोहासक्त। भरम्यां भखैं=भ्रम में ही फँसे रहते हैं, सार वस्तु ग्रहण नहीं कर पाते।
६. कुपछ=कुपथ्य। फेर=अन्तर, भूल।
७. जत=संयम। खिमा=क्षमा।

सुन्दरदास

सुन्दर अंदर पैसिकरि, दिल मौं गोता मारि।
तौ दिल ही मौं पाइये सांईं सिरजनहार ॥१॥

---

१. पैसिकरि=पैठकर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिस बंदे का पाकदिल, सो बंदा माकूल।
सुन्दर उसकी बंदगी सांईं करैं कबूल ॥२॥
हर दम हर दम हक्क तूं लेइ धनीं का नांव।
सुन्दर ऐसी बंदगी, पहुँचावै उस ठांव ॥३॥
मुखसेती बंदा कहै, दिल मैं अति गुमराह।
सुन्दर सो पावै नहीं, सांईं की दरगाह ॥४॥
मैं ही अति गाफिल हुई, रही सेज पर सोइ।
सुन्दर पिय जागै सदा, क्यौंकरि मेला होइ ॥५॥
सुन्दर याही देह मैं, हारि जीति कौ खेल।
जीतैं सो जगपति मिलै, हारैं माया मेल ॥६॥
सुन्दर सौदा कीजिये, भली बस्तु कछु खाटि।
नाना बिधि का टांगरा, उस बनिया की हाटि ॥७॥
सुन्दर मौन गहे रहै तबलग भारी तोल।
मुख बोलैं तें होत है सब काहू कौ मोल ॥८॥
सुन्दर सुवचन-तक्र तें राखैं दूध जमाइ।
कुवचन कांजी परत ही तुरत फाटिकरि जाइ ॥९॥
सूरज के आगै कहा, करैं जींगणा जोति।
सुन्दर हीरा लाल घर, ताहि दिखावै पोति ॥१०॥

---

२. बंदगी=सेवा।
४. दरगाह=परमेश्वर का निजस्थान; आत्मस्थिति से आशय है।
५. मेला=मिलन।
९. तक्र=मट्ठा, छाछ। काजी=नमकीन खट्टा पानी।
१०. जींगणा=जुगनू। पोति=काँच का रंग-बिरंगा गुरिया या मनका।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दरिया साहब (मारवाड़वाले)

दरिया बहु बकबाद तज, कर अनहद से नेह।
औंधा कलसा ऊपरे, कहा बरसावै मेह॥१॥
जन दरिया उपदेस दे, भीतर प्रेम सधीर।
गाहक हो कोइ हींग का, कहा दिखावै हीर॥२॥
दरिया गैला जगत को, क्या कीजै सुलझाय।
सुलझाया सुलझै नहीं, सुलझ-सुलझ उलझाय॥३॥
दरिया गैला जगत को, क्या कीजै समझाय।
रोग नीसरै देह में, पत्थर पूजन जाय॥४॥
कंचन कंचन ही सदा, काँच काँच सो काँच।
दरिया झूठ सो झूठ है, साँच साँच सो साँच॥५॥
कानों सुनी सो झूठ सब, आँखों देखी साँच।
दरिया देखे जानिये, यह कंचन यह काँच॥६॥
साध स्वाँग अस आँतरा, जेता झूठ अरु साँच।
मोती मोती फेर बहु, इक कंचन इक काँच॥७॥
पाँच सात साखी कही, पद गाया दस दोय।
दरिया कारज ना सरै, पेट-भराई होय॥८॥
मतवादी जानै नहीं, ततवादी की बात।
सूरज ऊगा उल्लुवा, गिनै अँधारी रात॥९॥

२. सधीर=दृढ़, पक्का। हीर=हीरा।
३. गैला=गहिला, पागल।
४. रोग=चेचक से तात्पर्य है। नीसरै=निकलता है। पत्थर पूजन जाय=कहकर देवी पूजने जाते हैं।
७. आँतरा=अंतर, फर्क।
९. मतवादी=साम्प्रदायिक लोग। ततवादी=तत्ववादी=ब्रह्मसाक्षात्कार जिन्होंने किया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीखत ग्यानी ग्यान गम, करै ब्रह्म की बात।
दरिया बाहर चाँदनी, भीतर काली रात ॥१०॥
राम बिना फीका लगै, सब किरिया सास्तर ग्यान।
दरिया दीपक कह करै, उदय भया निज भान ॥११॥
मुसलमान हिंदू कहा, षट दरसन रंक राव।
जन दरिया हरिनाम बिन, सब पर जम का दाव ॥१२॥
नारी आवै प्रीत कर, सतगुर परसै आन।
दरिया हित परदेस दे, माय बहिन धी जान ॥१३॥
नारी जननी जगत की, पाल-पोस दे पोष।
मूरख राम बिसार कर, ताहि लगावै दोष ॥१४॥

---

११. निजभान=आत्म-प्रकाश से आशय है।
१२. षटदरसन=छह शास्त्र। जम का दाव=मृत्यु का आक्रमण।
१३. धी=लड़की।

चरणदास

बहु बैरी घट में बसें, तू नहिं जीतत कोय।
निस-दिन घेरे ही रहैं, छुटकारा नहिं होय ॥१॥
जा घट चिन्ता-नागिनी, ता मुख जप नहिं होय।
जो टुक आवै याद भी, उहीं जाय फिर खोय ॥२॥
आसा-नदिया में चलै, सदा मनोरथ-नीर।
परमारथ उपजै, बहै, मन नहिं पकरै धीर ॥३॥

---

२. टुक=ज़रा-सा।
३. नहिं पकरै धीर=निश्चल नहीं होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभिमानी मींजे गये, लूट लिये धन बाम।
निरअभिमानी हो चले, पहुँचे हरि के धाम ॥४॥
चरनदास यों कहत हैं, सुनियो सन्त सुजान।
मुक्तिमूल आधीनता, नरकमूल अभिमान ॥५॥
जागै ना पिछले पहर, ताके मुखड़े धूल।
सुमिरै ना करतार कूँ, सभी गँवावै मूल ॥६॥
पिछले पहरे जागकरि, भजन करै चित लाय।
चरनदास वा जीव की, निस्चै गति ह्वै जाय ॥७॥
पहिले पहरे सब जगैं, दूजे भोगी मान।
तीजे पहरे चोर ही, चौथे जोगी जान ॥८॥
जो कोइ बिरही नाम के, तिनकूँ कैसी नींद।
सस्तर लागा नेह का, गया हिये कूँ बींध ॥९॥
सोये हैं संसार सूँ, जागे हरि की ओर।
तिनकूँ इकरस हीं सदा, नहीं सांझ नहिं भोर ॥१०॥
सोवन जागन भेद की, कोइक जानत बात।
साधूजन जागत तहाँ, जहाँ सबन की रात ॥११॥
जो जागै हरि-भक्ति में, सोई उतरै पार।
जो जागै संसार में, भवसागर में ख्वार ॥१२॥

४. मींजे गये = धूल में मिला दिये गये। वाम = वामा, स्त्री।
५. आधीनता = नम्रता, निरभिमानता।
१०. ताके मुखड़े धूल = उसे धिक्कार है।
११. गति = सद्गति, मोक्ष।
१२. भोगी = विषयी जीव।
१३. सस्तर = शस्त्र, हथियार। गया बींध = आरपार हो गया।
१४. सोये हैं संसार सूं = सांसारिक विषय-सुखों की ओर से अचेत। भोर = सवेरा, दिन।
१५. कोइक = विरला ही।
१६. ख्वार = नष्ट।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहजोबाई

सीस कान मुख नासिका, ऊँचे-ऊँचे ठाँव।
सहजो नीचे कारने, सब कोउ पूजै पांव ॥१॥
नन्हीं चींटी भवन में, जहाँ-तहाँ रस लेइ।
सहजो कुंजर अति बड़ो, सिर पै डारै खेह ॥२॥
बड़ा न जाने पाइहै, साहेब के दरबार।
द्वारे ही सूँ लागिहै, सहजो मोटी मार ॥३॥
भली गरीबी नवनता, सकैं नहीं कोइ मार।
सहजो रुई कपास को, काटै ना तरवार ॥४॥
साहन कूँ तो भय घना, सहजो निर्भय रंक।
कुंजर के पग बेड़ियाँ, चींटी फिरै निसंक ॥५॥

---

१. ठाँव=स्थान।
२. कुंजर=हाथी। खेह=धूल।
३. मोटी=भारी।
४. नवनता=नम्रता।
५. घना=बहुत, अधिक।

पलटूदास

वृच्छा फरें न आपको, नदी न अँचवें नीर।
परस्वारथ के कारने, संतन धरैं सरीर ॥१॥
बड़े बड़ाई में भुले, छोटे हैं सिरदार।
पलटू मीठो कूप-जल, समुँद पड़ा है खार ॥२॥

---

१. अँचवें=पीती हैं।
२. खार=खारा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खोजत गठरी लाल की, नहीं गाँठि में दाम।
लोक-लाज तोड़ै नहीं, पलटू चाहै राम ॥३॥
पलटू बाजी लाइहौं, दोऊ बिधि से राम।
जो मैं हारौं राम को, जो जीतौं तौ राम ॥४॥
बिन खोजे से ना मिलै, लाख करै जो कोय।
पलटू दूध से दही भा, मथिबे से घिव होय ॥५॥
गारी आई एक से, पलटे भई अनेक।
जो पलटू पलटै नहीं, रहै एक की एक ॥६॥
सुनिलो पलटू भेद यह, हँसि बोले भगवान।
दुख के भीतर मुक्ति है, सुख में नरक निदान ॥७॥

---

३. लाल=रत्न।

तुलसी साहब

तन मन से साँचा रहै, गहै जो सतगुर बाँह।
काल कधी रोकै नहीं, दे बताइ धुर राह ॥१॥
अब समझे से का भयो, चिड़ियाँ चुग गईं खेत।
चेत किया नहिं आपमें, रहे कुटुंब के हेत ॥२॥
आँखी में जाले पड़े, काढ़ै कौन निकारि।
जब सथिया नस्तर भरै, सुरति-सलाई डारि ॥३॥
जुलमी की जाली पड़े, बड़े-बड़े उमराव।
दाँव कधी लागै नहीं, भागन कवन उपाव ॥४॥

---

३. सथिया=जर्राह। नस्तर भरें=चीरा लगाते हैं।
४. जाली=जाल, फंदा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खाय पिये उतना रखै, बाकी रखै न पास।
और आस व्यापैं नहीं, सतगुरु का बिस्वास ॥५॥
विस्वामित्र वसिष्ठ को, भयो परस्पर वाद।
उन तप को कीन्हा बड़ा, इन सतसंग अगाध ॥६॥
जल मिसरी कोइ ना कहै, सरबत नाम कहाय।
यों घुलके सतसंग करै, काहे भरम समाय ॥७॥

---

५. बाकी=अतिरिक्त वस्तु। और आस व्यापैं नहीं=दूसरों की आशा नहीं सताती।
६. उन······अगाध=विश्वामित्र ने तप को बड़ा बताया, और वसिष्ठ ने सत्संग को बड़ा कहा।
७. समाय=पड़े।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi